

सत्य धर्म

शैख अब्दुर्रहमान

बिन हम्माद

आलु उमर

सत्य धर्म

शैख

अब्दुर्रहमान बिन हम्माद आलु उमर

شركاء التنفيذ:



المحتوى الإسلامي



رواد الترجمة



جمعية الربوة



دار الإسلام

يتاح طباعة هذا الإصدار ونشره بأي وسيلة مع
الالتزام بالإشارة إلى المصدر وعدم التغير في النص.

☎ Telephone: +966114454900

@ ceo@rabwah.sa

✉ P.O.BOX: 29465

☎ RIYADH: 11557

🌐 www.islamhouse.com

अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ), जो बड़ा दयावान एवं अत्यंत कृपालु है

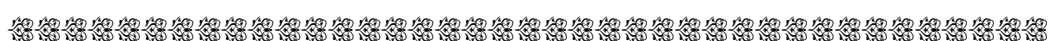
भूमिका और समर्पण

सारी प्रशंसाएं अल्लाह तआला ही के लिए उचित हैं जो सारे संसार का रब है। एवं दुरूद व सलाम की धारा बरसे अल्लाह के तमाम रसूलों पर:

यह मुक्ति की ओर एक आवाहन है जिसे मैं संसार के हर एक बुद्धिमान (पुरुष हो या महिला) के सामने रख रहा हूँ, शक्ति एवं ऊंचाई वाले अल्लाह से आशा करता हूँ कि जो उस के मार्ग से भटका गया हो , उसे वह इसके माध्यम से भाग्यशाली बनाए, और मुझे तथा जिसने इस के प्रचार एवं प्रसार में भाग लिया हो उसे उत्तम पुण्य से सम्मानित करे। अतः अल्लाह की मदद से कहता हूँ:

ऐ बद्धिमान इंसान ! तुझे ज्ञात होना चाहिए कि मुक्ति एवं कल्याण इस जीवन में हो या (आखिरत) के जीवन में , वह इस बात पर निर्भर है कि तुम अपने रब को पहचानो जिसने तुम्हें पैदा किया , उस पर ईमान (विश्वास) ले आओ , उसी की उपासना (इबादत) करो , तथा उस नबी को पहचानो जिसे तुम्हारे रब ने तुम्हारी एवं संसार के सारे लोगों की ओर भेजा है , उस पर ईमान ले आओ तथा उसी के रास्ते पर चलो एवं उस सत्य धर्म को पहचानो जिसका तुम्हारे रब ने तुम्हें आदेश दिया है , उस पर ईमान ले आओ एवं उसी के नियमानुसार कार्य करो ।

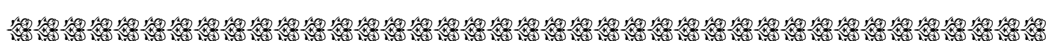
यह पुस्तक " सत्य धर्म " जो आप के सामने है इसमें उन्हीं मुख्य बातों की चर्चा है जिसकी खोज करना तथा उस पर चलना अति आवश्यक है। मैंने टिप्पणी में ज़रूरत के अनुसार कुछ शब्दों की व्याख्या एवं कुछ नियमों का स्पष्टीकरण कर दिया है। और इन सारी चीजों के वर्णन में मैं केवल अल्लाह की बात तथा अल्लाह के रसूल की हदीसों पर निर्भर रहा हूँ, इसलिए कि इस सत्य धर्म का यही एक मात्र मूल सूत्र है, जिसके अतिरिक्त अल्लाह तआला कोई और धर्म स्वीकार नहीं करेगा।



मैंने अनुचित अनुसरण (अंधी तक्लीद) को छोड़ दिया है जिसने बहुत से लोगों को पथभ्रष्ट किया है बल्कि मैंने कुछ पथभ्रष्ट सम्प्रदायों की भी चर्चा की है जो सत्य पर होने का दावा तो करते हैं किन्तु उनका सत्य से कोई नाता नहीं ,ताकि सीधे - सादे लोग इनसे बचे रहें , अल्लाह ही मेरे लिए काफ़ी है तथा वही उत्तम कार्य को सफल करने वाला है।

अल्लाह तआला की क्षमा का मोहताज

शैख अब्दुर्रहमान बिन हम्माद आलु उमर



पहला अध्याय: अल्लाह(१) की जानकारी जो महान सृष्टा है।

ऐ बुद्धिमान इंसान! तुझे ज्ञात होना चाहिए कि जिस रब ने तुझे वजूद बखशा तथा बहुत सारी नेमतों (अनुग्रहों) के द्वारा तेरा पालन-पोषण किया, वही अल्लाह सारे संसार का रब है, अल्लाह तआला पर विश्वास करने वाले बुद्धिमानों ने उसे अपनी आँखों से देखा तो नहीं है किन्तु उस के अस्तित्व को प्रमाणित करने वाली निशानियों को अवश्य देखा है, जिन से यह साबित होता है कि अल्लाह तआला ही उत्पत्तिकर्ता तथा आकाश एवं पृथ्वी के कुशल प्रबन्धक है, और इन प्रमाणों के माध्यम से उन्होंने उसे पहचाना है, कुछ निशानियाँ निम्नलिखित हैं:

तर्क १ : जगत, जीवन एवं मानव, यह विनाश होने वाली चीजें हैं, जिन का आरम्भ एवं अंत है और यह सब किसी दूसरे की मुहताज हैं।

तथा जो दूसरे का मुहताज हो वह सृष्टि ही होगा , तथा सृष्टि का कोई न कोई उत्पत्तिकर्ता तो होगा ही , तथा वह महान उत्पत्तिकर्ता अल्लाह तआला है। अल्लाह ने ही हमें यह सूचना दी है कि वह जगत का उत्पत्तिकर्ता भी है एवं कुशल प्रबन्धक भी है और यह सूचना अल्लाह ने अपने रसूलों पर उतारी गई किताबों में दी है।

निस्संदेह रसूलों ने अल्लाह की बात जूँ का तूँ लोगों तक पहुँचा दी है तथा लोगों को उस पर विश्वास करने और उसी की उपासना करने का निमन्त्रण भी दिया है। अल्लाह तआला अपनी किताब कुरआन करीम में फरमाते हैं: तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है, जिसने आकाशों तथा धरती को छः दिनों में बनाया[1], फिर अर्श (सिंहासन) पर बुलंद हो गया। वह रात से दिन को इस प्रकार से ढक देता है कि रात उसे जलदी से आ लेती है, सूर्य तथा चाँद और तारे उसकी आज्ञा के अधीन हैं। सुन लो! वही उत्पत्तिकार है और वही शासक[2] है। वही अति शुभ अल्लाह संसार का पालनहार है। सुरा अल-आराफ : 54

आयत का संक्षिप्त भावार्थ:



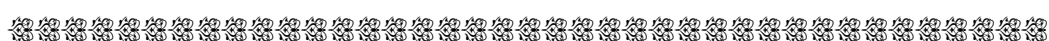
अल्लाह तआला तमाम लोगों को सूचित कर रहा है कि वही उन का रब है जिस ने उन्हें पैदा किया है तथा आकाशों एवं धरती को छः दिनों में पैदा किया है और वह अपने अर्श पर बलंद है।

अल्लाह तआला उस सिंहासन के ऊपर उच्च है , तथा अपने ज्ञान, श्रवण शक्ति एवं प्रेक्षा के द्वारा सारी सृष्टि के साथ है , उससे कोई चीज छुपी नहीं है , अल्लाह ने सूचना दी है कि उस ने रात को उस के अंधकार के द्वारा दिन को ढांकने का साधन बनाया है , वह तीव्रता के साथ उसके पीछे आती है , तथा उसने सूरज , चाँद एवं सितारे पैदा किये , इन सबको अपने अधीन कर रखा है , वह अपनी - अपनी कक्षा में चलते हैं , उतपत्ति एवं आदेश देने का वह एक अकेला पात्र है , वह अपने अस्तित्व एवं विशेषताओं में महान एवं संपूर्ण है वह हमेशा खूब उपकार एवं भलाई करता है , वह सारे संसार का रब है , जिसने उन्हें बनाया और नेमतों के द्वारा उनका पालन - पोषण किया।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान है : तथा उसकी निशानियों में से है रात्रि, दिवस, सूर्य तथा चन्द्रमा, तुम सज्दा न करो सूर्य तथा चन्द्रमा को और सज्दा करो उस अल्लाह को, जिसने पैदा किया है उनको, यदि तुम उसी (अल्लाह) की इबादत (वंदना) करते हो।[1] [सूरा फ़स्सिलत : 37]

आयत का संक्षिप्त भावार्थ:

उपरोक्त आयत में सूचना दी जा रही है कि अल्लाह तआला को प्रमाणित करने वाली निशानियों में रात - दिन , चाँद एवं सूरज हैं। चाँद एवं सूरज को सजदा करने से अल्लाह तआला रोक रहा रहा है , क्योंकि वह दोनों भी दूसरे जनिता की तरह जनित हैं तथा जनित की उपासना (इबादत) किसी भी दशा में सही नहीं है , सजदा करना इबादत है , अल्लाह तआला ने लोगों को इस आयत में तथा इस के अतिरिक्त दूसरी आयतों में आदेश दिया है कि केवल एक अल्लाह ही को सजदा करो इसलिए कि वही पैदा करने वाला एवं कुशल प्रबन्धक है और उपासना के योग्य है



अल्लाह ने पुरुष एवं स्त्री को पैदा किया है, पुरुषों एवं स्त्रियों का पाया जाना अल्लाह के अस्तित्व का प्रमाण है।

ज़बानों और रंगों का भिन्न होना, दो व्यक्ति एक ही आवाज़ वाले पाये जाते हैं न एक ही रंग वाले। बल्कि दोनों में अवश्य कुछ न कुछ अंतर होता है।

भाग्यों की विविधता: एक अमीर दूसरा गरीब, कोई प्रमुख तो कोई अनुगामी जबकि हरेक के पास ज्ञान एवं बुद्धि है और सभी को दौलत, इज्जत तथा सुंदर बीवी की आकांक्षा होती है। फिर भी इनसान अपनी किसमत से ज्यादा पा नहीं सकता।

यदि अल्लाह ने इस संसार में किसी को कुछ न दिया हो तो अल्लाह ने सूचना दी है कि वह स्वर्ग (जन्नत) में उसकी नेमतों में अधिकता करेगा इस शर्त पर कि उस की मृत्यु ईमान पर हुई हो , इसके अतिरिक्त अल्लाह ने निर्धन को कुछ ऐसी विशेषताएं प्रदान की हैं जिन से वह मानसिक एवं शारीरिक रूप से लाभांवित होता है जिन से बहुत से धनवान वंचित होते हैं , यह अल्लाह की हिकमत एवं न्याय का दर्शन है।

नींद तथा सच्चा सपना जिस के द्वारा अल्लाह तआला सोने वालों को कुछ परोक्ष की सूचना शुभ समाचार या चेतावनी हेतु दे देता है।

आत्मा (रूह) जिसकी वास्तविकता अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता।

तर्क ७ :

मानव , तथा उसके शरीर में उपस्थित इंद्रियाँ, नर्वस सिस्टम, मस्तिष्क एवं पाचन शक्ति का क्रम आदि।

तर्क ८ :

बंजर जमीन पर अल्लाह तआला वर्षा बरसाते हैं तथा अनेक प्रकार के फल - फूल तथा पेड़- पौधे उगाते हैं । यह कुछ तर्क उन सैकड़ों तर्कों में से है जिनकी चर्चा अल्लाह तआला ने कुरआन में की है , यह तर्क उस के अस्तित्व, उसके उत्पत्तिकर्ता होने एवं सारे संसार का कुशल प्रबंधक होने को प्रमाणित करते हैं।

तर्क ९ :

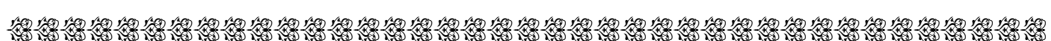
स्वाभाविक; जिस पर अल्लाह ने लोगों को बनाया है, अल्लाह के अस्तित्व तथा उसके उत्पत्तिकर्ता और प्रबंधक होने की गवाही देता है, जो इसको नहीं मानता है वह अपने आप को भ्रम में फंसा कर अभागा बना लेता है, कम्युनिस्ट इस संसार में अभागापन का जीवन व्यतीत करता है, इसलिए कि मृत्यु के बाद उसका ठिकाना नरक (जहन्नम) में होगा, जिस अल्लाह ने उसे अनस्तित्व से अस्तित्व प्रदान किया और विभिन्न प्रकार की नेमतों से उसको सम्मानित किया उसे झुठलाने का यही अंजाम है। और अगर उसे इस परिणाम से बचना हो तो वह 'तौबा' कर ले तथा अल्लाह और उसके रसूलों पर एवं उस के धर्म (दीन) पर ईमान ले आये।

तर्क १० :

बरकत: यानी कुछ प्राणि वर्गों में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रहती है जैसे भेड़, बकरी।
इसके विपरीत कुछ में ऐसी वृद्धि नहीं होती है जैसे कुत्ते और बिल्लियाँ।

★ ★ ★

अल्लाह तआला का एक गुण है:

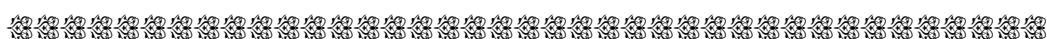


जैसाकि उसने ईसा عليه السلام को बिना पिता के पैदा किया तथा उन्हें बात करने की क्षमता दी जबकि वह अभी अपनी माता की गोद ही में थे, जैसाकि उसने मूसा عليه السلام की छड़ी को दौड़ता हुआ साँप बना दिया और जब उन्होंने समुद्र में उसे मारा तो समुद्र दो भागों में विभाजित हो गया, समुद्र के बीच रास्ता बन गया जिससे वह और उनकी कौम बाहर निकल आए, जैसाकि उसने अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद صلى الله عليه وسلم के लिए चाँद के दो टुकड़े कर दिए तथा वृक्ष को यह आदेश दिया कि वह आप صلى الله عليه وسلم को सलाम करे , तथा पशु को आदेश दिया कि वह आप صلى الله عليه وسلم की दूतत्व (रिसालत) की गवाही उच्च आवाज में दे कि लोग सुन सकें , वह कहता था : मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं , तथा आप ने " बुराक़ " पर ' मसजिदे हराम से मसजिदे अक़सा तक की यात्रा की , फिर आप को " आकाश की ओर ले जाया गया, आप صلى الله عليه وسلم के साथ फरिश्ता जिब्राईल عليه السلام थे , यहाँ तक कि आप आकाशों के ऊपर पहुँच गये , अल्लाह ने आप से बात की , आप صلى الله عليه وسلم पर नमाज़ें अनिवार्य कीं . फिर आप صلى الله عليه وسلم धरती पर (मस्जिदे हराम) लौट आये । रास्ते में आप صلى الله عليه وسلم ने हर आकाश के निवासियों का दर्शन किया , यह सारी घटना एक ही रात में फ़ज्र से पहले घटी , " इस्रा " व " मेराज " की घटना क़ुरआन एवं हदीसों में तथा इस्लामी इतिहास की पुस्तकों में प्रसिद्ध है।



और अल्लाह तआला की कई और पवित्र विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

1- सुनना , देखना , ज्ञान , शक्ति एवं संकल्प, हर वस्तु को वह देखता है , सुनता है , उसके सुनने और देखने में कोई चीज़ बाधा नहीं डाल सकती।



चाहता हूँ उनसे कोई जीविका और न चाहता हूँ कि वे मुझे खिलायें। अवश्य अल्लाह ही जीविका दाता, शक्तिशाली, बलवान् है। सूरह अज्ज़ारियात: 56-58

आयत का संक्षिप्त भावार्थ:

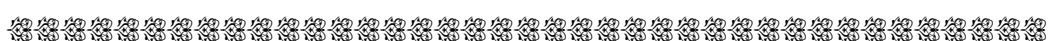
पहली आयत में अल्लाह तआला ने सूचित किया कि उस ने इनसानों तथा जिन्नो को केवल इस लिए पैदा किया कि वे उस की इबादत करें और दूसरी तथा तीसरी आयत में फरमाया कि वह अपने बन्दों से बेनियाज़ है, न उन से जीविका चाहता है न खाना क्योंकि वही जीविका दाता ,शक्तिशाली है, सब को उसी के पास से रोज़ी मिलती है। वही बारिश बरसाता है एवं ज़मीन से जीविका निकालता है।

और दूसरी जो रचनाएं धरती पर हैं अल्लाह ने उन्हें इनसान के लिए बनाया है ताकि वह अल्लाह के आज्ञापालन में उन का उपयोग करे और अल्लाह की शरीयत (विधान) के अनुसार उन के साथ व्यवहार करे। और इस संसार में जो कुछ भी है सब की रचना अल्लाह तआला ने किसी हिकमत के मद्दे नज़र की है जिस का वर्णन कुरआन में है और जिसे उलमा अपने अपने इल्म (ज्ञान) के अनुसार जानते हैं। आयु तथा जीविका का कम अथवा ज़्यादा होना और घटनाएं तथा आपदाएं सब अल्लाह की अनुमति के अनुसार ही होती हैं ताकि वह अपने बुद्धिमान बंदों की परीक्षा ले। अतः जो अल्लाह की तक्रदीर स्वीकार कर उस पर संतुष्ट होगा और अल्लाह को राज़ी करने की कोशिश करेगा उस पर अल्लाह राज़ी होगा एवं दुनिया तथा आखिरत में उसे सौभाग्य प्राप्त होगा। और जो अल्लाह की तक्रदीर न मान कर उस पर असंतुष्ट होगा उसे अल्लाह की ओर से भी नाराज़ी मिलेगी ओर दुनिया तथा आखिरत में वह बदकिस्मत होगा।

हम अल्लाह तआला से उसकी संतुष्टि की प्रार्थना करते हैं और उसकी नाराज़ी से उसकी शरण मांगते हैं।



मृत्यु के पश्चात जीवन, लेखा - जोखा, कर्मों का फल एवं स्वर्ग-नरक



ऐ बुद्धिमान व्यक्ति, जब आप ने यह समझ लिया कि अल्लाह तआला ने आप को अपनी उपासना के लिए पैदा किया है तो अब यह भी जान लें कि अल्लाह तआला ने अपनी सारी पुस्तकों में, जो उस ने अपने रसूलों पर उतारी हैं, यह सूचना दी है कि वह आप को मृत्यु के बाद दोबारा जीवित करेगा एवं आप को आप के कर्मों का फल प्रदान करेगा। क्योंकि इनसान को जब मौत आती है तो वह इस नश्वर जीवन तथा कर्म स्थल से निकल कर ऐसी जगह पहुंचता है जहां उसे बदला दिया जाएगा और कभी मौत नहीं आएगी। जब इनसान की आयु, जो अल्लाह ने उस के लिए तै की है, समाप्त हो जाती है अल्लाह तआला मौत के फरिश्ते को आदेश देता है, वह उस की रूह निकालता है और इनसान मौत का मज़ा चखने के बाद मर जाता है।

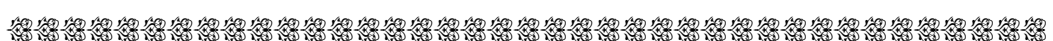
रूह यदि मोमिन हो तो अल्लाह तआला उसे "दारुन नईम" स्वर्ग में रखता है , यदि वह काफिर एवं अवज्ञाकारी हो , अंतिम दिन को झुठलाने वाली हो तो उसे "दारूल अजाब" आग में रखता है । यहाँ तक कि महाप्रलय (कियामत का समय) आ जाये । जब सारी सृष्टि की मृत्यु हो जायेगी सिवाय अल्लाह के कोई बाकी नहीं रहेगा। फिर अल्लाह तआला सारी दुनिया को दोबारा जीवित करेगा तथा रूह शरीर में लौटा देगा और शरीर अपनी पुरानी अवस्था में लौट आएगा जैसाकि पहली बार अल्लाह ने उसे पैदा किया था। ताकि पुरुष, स्त्री, प्रमुख, अनुगामी, अमीर ओर गरीब सब को उन के कर्मों के फल प्रदान करे। वह किसी के साथ अन्याय नहीं करेगा। मज़लूम के लिए ज़ालिम से प्रतिशोध लिया जाएगा। बल्कि जानवरों से भी एक दूसरे के लिए बदला लिया जाएगा फिर अल्लाह तआला उन से कहेगा: मिट्टी हो जा, क्योंकि वह स्वर्ग अथवा नरक में प्रवेश नहीं करेंगे।

जिन्न और इंसान में से हर व्यक्ति को उस के कर्मों का फल प्रदान करेगा , मोमिनों को, जिन्होंने उस की बात मानी एवं उस के रसूलों का अनुसरण किया, स्वर्ग में प्रवेश प्रदान करेगा चाहे वे सबसे गरीब हों, तथा काफिरों को, चाहे वे संसार में कितने ही धनवान एवं उच्च पद के मालिक क्यों न रहे हों, नरक में डालेगा। अल्लाह तआला का कथन है: अल्लाह के निकट तुम में सब से अधिक प्रतिष्ठावान वह है जो सब से ज़्यादा तक्रवा (अल्लाह का

जन्नत (स्वर्ग) : यह नेमतों (हर प्रकार के आनंद) का स्थान है, उस में इतनी सारी नेमतें हैं कि कोई उनका बखान नहीं कर सकता, उसमें सौ श्रेणियाँ हैं, हर श्रेणी में लोग अपने-अपने ईमान एवं कर्म के हिसाब से रहेंगे। स्वर्ग की अंतिम श्रेणी के लोगों को जो नेमतें प्राप्त होंगी वे संसार के सबसे अधिक समृद्ध बादशाह को मिली दौलत से भी कई गुना अधिक होंगी।

यदि परलोक में मौत पाई जाती तो नरक वाले उसे देखते ही मर जाते। लेकिन मौत तो एक ही बार आती है जिससे इनसान परलोक पहुंचता है। कुरआन में मौत, पुनर्जीवन, हिसाब एवं स्वर्ग-नरक का संपूर्ण वर्णन है। हमने यहां केवल कुछ इशारे किए।

एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया: काफ़िरों का यह विचार है कि वह कभी मृत्यु के पश्चात उठाये नहीं जायेंगे , कह दीजिए क्यों नहीं ! शपथ है मेरे रब की तुम्हें दोबारा उठाया जायेगा तथा तुम्हारी करतूतों की तुम्हें सूचना दी जायेगी और यह कार्य अल्लाह के लिए बहुत ही सरल है। स़रा अत-तगाबुन: 7



पहली आयत में अल्लाह ने सूचना दी है कि उसने इंसानों को मिट्टी से पैदा किया । वह ऐसे कि उसने उनके पिता आदम को मिट्टी से बनाया , तथा मृत्यु के पश्चात वह उन्हें कब्रों में लौटा देता है जिसमें उनकी प्रतिष्ठा है , वह दोबारा उन्हें उससे उठायेगा और वह जीवित होंगे , जब सारे लोग जीवित हो जायेंगे तो हर व्यक्ति को उसके कर्मों का फल दिया जायेगा।

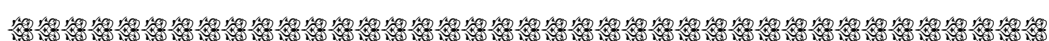
दूसरी आयत में अल्लाह तआला काफिरों का विरोध कर रहे हैं जो दोबारा जीवित होने को झुठलाते हैं तथा विनाश के पश्चात जीवन को विश्वास योग्य नहीं समझते, अल्लाह तआला कहते हैं कि वह उन्हें जीवित करेगा जैसा कि उसने उन्हें प्रथम बार अनास्तित्व से अस्तित्व में लाया था।

तीसरी आयत में भी काफिरों के विचार का खंडन है जो मृत्यु के पश्चात जीवन का इंकार करते थे, अल्लाह ने रसूलुल्लाह को आदेश दिया कि वह मजबूत क्रसम खाकर बयान करें कि अल्लाह तआला उन्हें शीघ्र ही दोबारा उठायेगा तथा उन्हें उन के कर्मों का फल देगा और यह सारा काम अल्लाह के लिए बहुत ही सरल है।

एक और आयत में अल्लाह ने सूचना दी है कि वह जब ऐसे लोगों को दोबारा उठाएगा जो दूसरे जीवन एवं आग की यातना का इंकार करते हैं तो उन्हें आग में डालेगा और उन से कहा जाएगा: लो नरक की यातना का स्वाद चखो जिसको तुम झुठलाते थे। सूरा अस-सजदह: 20

इंसान की कथनी एवं करनी का सुरक्षित होना:

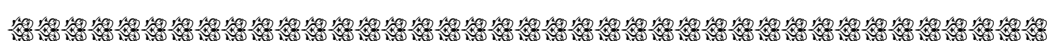
अल्लाह ने यह सूचना दे दी है कि इनसान जो कुछ भी कहेगा या करेगा, चाहे अच्छा हो या बुरा, गुप्त हो या अगोपन उसे सब मालूम है, और उस ने यह सारी बातें आसमान, ज़मीन और इनसान आदि की रचना से पहले ही अपने पास लौह ए महफूज में लिख रखी हैं। इस के अलावा उसने हर इनसान के साथ दो फरिश्ते नियुक्त कर रखे हैं, एक दाएँ जो नेकियाँ लिखता है और दूसरा बाएँ जो बुराइयाँ लिखता है, कुछ भी नहीं छोड़ते। और अल्लाह तआला ने



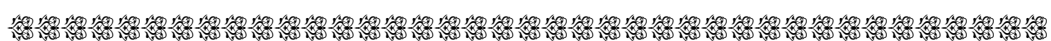
कुरआन ए करीम में इन बातों का सविस्तार वर्णन मौजूद है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: वह जब भी कोई शब्द मुंह से निकालता है एक निरीक्षक उस के पास तैयार होता है। सूरा क़ाफ़: 18 एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: और निस्संदेह तुम पर सम्मानित लिखने वाले निरीक्षक नियुक्त हैं। जो कुछ तुम करते हो वे जानते हैं। सूरतुल इनफ़ितार: (10-12)

अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि उन्होंने हर इंसान के साथ दो फरिश्तों को लगा दिया है , एक दाएँ है जो नेकियाँ लिखता है एक बाएँ है जो बुराइयाँ लिखता है । उसने इंसानों के साथ प्रतिष्ठित फरिश्तों को लगा रखा है , वह उनके सारे कामों को लिखते हैं । अल्लाह तआला ने उन्हें यह शक्ति दी है कि वह उन के सारे कामों का ज्ञान रखते हैं और उन्हें लिखते हैं। और अल्लाह ने भी इन चीज़ों को इन्सान की रचना से पहले " ही लौह ए महफूज़ " में लिख रखा है और इन से अवगत भी है।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य (माबूद) नहीं है तथा मुहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم अल्लाह के रसूल हैं तथा मैं गवाही देता हूँ कि स्वर्ग सत्य है , नरक सत्य है और प्रलय आने ही वाला है उसमें कोई संदेह नहीं । अल्लाह तआला कब्र वालों को लेखा - जोखा के लिए दोबारा जीवित करेगा , अल्लाह ने अपनी किताब में और प्यारे रसूल صلی اللہ علیہ وسلم के माध्यम से जिस चीज की भी सूचना दी है वह सत्य है।



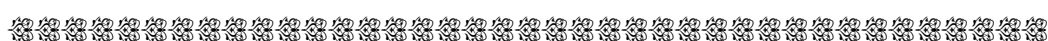
ऐ बुद्धिमान व्यक्ति, मैं तुम्हें भी इसी गवाही पर ईमान लाने, इसका ऐलान करने तथा इसके अनुसार कार्य करने का आह्वान करता हूँ, यही मुक्ति का मार्ग है।



अंतिम रसूल मुहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم को अल्लाह ने कुछ विशेषताओं से सम्मानित किया है जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

2- उन्हें सारे लोगों की ओर रसूल बना कर भेजा गया। यूँ सारे लोग मुहम्मद की उम्मत (जाति) हैं, जो उनका अनुसरण करेगा जन्नत में प्रवेश करेगा और जो अवज्ञा करेगा नरक में जाएगा। यहां तक कि यहूदी और ईसाई पर भी उनका अनुसरण अनिवार्य है। यदि कोई उनके रास्ते पर नहीं चलता तो वह मूसा, ईसा और बाक़ी सारे नबियों का इनकार करने वाला होगा। मूसा, ईसा या किसी भी नबी का उस व्यक्ति से कोई नाता नहीं जो मुहम्मद की पैरवी न करे, इसलिए कि अल्लाह तआला ने सारे नबियों को आदेश दिया था कि वे मुहम्मद के आगमन की शुभ सूचना दें तथा अपनी उम्मतों को उनके अनुसरण की ओर आह्वान करें। दूसरा कारण यह है कि आप जो धर्म (दीन) लाये हैं यह वही धर्म है जो सारे नबी अपनी कौमों के पास लाये थे और अल्लाह ने उसे पूर्ण एवं सरल अंतिम रसूल मुहम्मद के समय में किया। मुहम्मद के भेजे जाने के बाद इस्लाम के अतिरिक्त किसी और धर्म को अपनाने की बिल्कुल अनुमति नहीं है इसलिए कि यही पूर्ण धर्म है जिसके द्वारा अल्लाह ने सारे धर्मों को निरस्त कर दिया है तथा वही सत्य एवं सुरक्षित धर्म है।

मगर यहूदियत और ईसाइयत परिवर्तित धर्म हैं, अब यह वैसे नहीं रहे जैसे अल्लाह ने इन्हें उतारा था। अतः हर वह व्यक्ति जो मुसलमान हो और मुहम्मद का अनुसरण करने वाला हो उसे मसा, ईसा और सारे नबियों का अनुगामी माना जाएगा और जो इसलाम से





लेकिन अल्लाह तआला ने आप को एक विशेष बौद्धिक चमत्कार भी प्रदान किया है जो इस संसार के अंत तक बाकी रहेगा और ऐसा चमत्कार किसी और नबी को प्राप्त नहीं हुआ। और वह है: कुरआने करीम -अल्लाह के शब्द- जिसकी रक्षा की जिम्मेदारी स्वयं अल्लाह ने ली है इसी लिए कोई उसे बदल नहीं सकता और यदि कोई एक अक्षर भी बदलने की कोशिश करेगा तो यह बात छिपी नहीं रहेगी। देखें मुसलमानों के पास कुरआने करीम की लाखों कापियां हैं लेकिन उन में एक अक्षर का भी अंतर नहीं है।

मगर तौरात और इनजील के प्रकाशन भिन्न हैं और उन में अंतर भी पाया जाता है क्योंकि यहूदियों तथा ईसाइयों ने अपनी इन पुस्तकों के साथ खिलवाड़ किया और उनकी रक्षा नहीं की। मगर कुरआन की रक्षा का दायित्व किसी और को नहीं दिया गया बल्कि खुद अल्लाह तआला ने उसकी रक्षा की। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: निःसंदेह हमने ही कुरआन को उतारा है तथा हम ही इसकी रक्षा करने वाले हैं। [सूरा अल-हिज्र : 9]

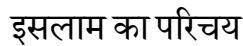
कुरआन अल्लाह का कलाम है और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं , इस बात के बौद्धिक तर्क एवं कुरआनी प्रमाण।

न्याय शास्त्र के अनुसार इस बात के बहुत से बौद्धिक तर्क हैं, जिनमें से एक यह है कि मक्का के काफ़िरों ने जब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाया और कुरआन के अल्लाह का कलाम होने का इंकार किया तो अल्लाह ने उन्हें खुला चैलेंज दिया कि वह इस जैसा कुरआन ले आयें , किन्तु वह विवश हो गये हालांकि वह उनकी भाषा थी , वह मिष्टभाषी लोग थे , उनके पास बड़े - बड़े साहित्यकार एवं व्याख्याकार और उच्च स्तर के कविगण थे , किन्तु वह विवश हो गये । फिर अल्लाह ने उन्हें चैलेंज किया कि कम से कम कुरआन जैसी दस सूरतें ही गढ़ कर बता दें , फिर भ वह विवश रहे । फिर अल्लाह ने उन्हें एक ही सूरत समानता में पेश करने का चैलेंज किया , किन्तु वह फिर भी विवश रहे , उसके बाद अल्लाह ने उनकी विवशता का ऐलान कर दिया। {(ऐ पैगम्बर!) आप कह दीजिए कि यदि सारे इंसान एवं जिन्नात मिलकर भी इस प्रकार का कुरआन लाना चाहें, तो इस जैसा कुरआन

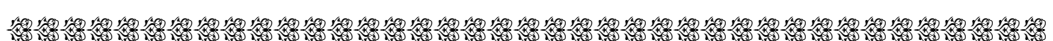
██████████

██████████

ऐ बुद्धिमान ! जब तुम्हें ज्ञान हो गया कि अल्लाह तआला तुम्हारा ईश्वर है जिसने तुम्हें पैदा किया , तुम्हें जीविका प्रदान किया , वही अकेला पूज्य है जिसका कोई साझेदार नहीं , तुम पर अनिवार्य है कि उसी की आराधना करो , तथा तुम्हें ज्ञान हो गया कि मुहम्मद अल्लाह के दूत (रसूल) हैं सारे लोगों के लिए तो यह भी आप ज्ञात कर लें कि अल्लाह एवं उस के दूत पर आपका ईमान उसी समय सटीक होगा जब आप इस्लाम धर्म की जानकारी प्राप्त कर लें , अल्लाह ने इसी धर्म को अपनी प्रसन्नता का कारण बनाया, अपने रसूलों को इसी के प्रचार एवं प्रसार का आदेश दिया तथा अंतिम संदेशवाहक मुहम्मद ﷺ को भी इसी धर्म के साथ भेजा तथा इसी के अनुसार कार्य करना उन पर अनिवार्य किया।



इस्लाम वह सांसारिक धर्म है जिसे अल्लाह ने सारे लोगों को अपनाने का आदेश दिया है , सारे नबी इसी पर ईमान लाये और अपने इस्लाम का एलान किया । अल्लाह तआला ने यह बात स्पष्ट कर दी कि इस्लाम ही सत्य धर्म है , इस के अतिरिक्त वह किसी और धर्म को स्वीकार नहीं करेगा , अल्लाह का कथन है: निःसंदेह अल्लाह के निकट धर्म केवल इस्लाम है [सूरा आल-ए-इमरान : 19] एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान है : {और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को अपनाएगा, उसे उसकी तरफ़

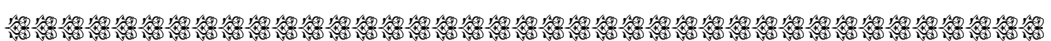


[सूरह आल-ए-इमरान : 85]

1- अल्लाह तआला सूचित करता है कि उसके निकट धर्म केवल इसलाम ही है।

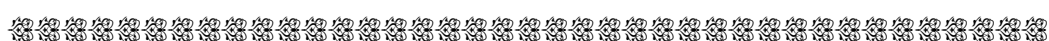
इसीलिए सारे नबियों ने अपने इस्लाम का एलान किया तथा जिसने इस्लाम को स्वीकार नहीं किया उससे अपनी असंतुष्टता का प्रदर्शन किया, यहूदियों तथा ईसायों में जिसे कल्याण एवं मुक्ति प्रिय हो उसे इस्लाम स्वीकार कर लेना चाहिए और मुहम्मद ﷺ की पैरवी करनी चाहिए ताकि वह वास्तव में ईसा व मूसा अलैहिमस्सलाम के अनुयायी हो सकें, क्योंकि मूसा एवं ईसा और सारे रसूल अलैहिमस्सलाम मुसलमान थे तथा उन्होंने लोगों को इस्लाम का निमंत्रण दिया था, अल्लाह के रसूल ﷺ की ईशदूतता के बाद से महाप्रलय (कियामत) तक किसी को यह अधिकार नहीं है कि वह अपने आप को मुसलमान कहे और न अल्लाह तआला के निकट यह दावा स्वीकृत होगा जबतक वह अल्लाह के रसूल पर ईमान न लाए, उनकी पैरवी न करे तथा कुरआन के अनुसार कार्य न करे। अल्लाह तआला फरमाते हैं: (ऐ पैगम्बर) आप कह दीजिए यदि तुम अल्लाह से प्रेम रखते हो तो मेरे मार्ग पर चलो अल्लाह भी तुम से प्रेम रखेगा, तुम्हारे गुनाह क्षमा कर देगा और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। [सूरा आल-ए-इमरान: 31]

आयत का संक्षिप्त भावार्थ:



★ ★ ★

"ला इलाहा इल्लल्लाह" का अर्थ यह है कि धरती एवं आकाश में अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। केवल वही अकेला सत्य पूज्य है और उसके अतिरिक्त अन्य सारे पूज्य असत्य हैं।



उपासना (इबादत) की किस्में:

यह सारी चीजें अल्लाह के अतिरिक्त किसी और से नहीं मांगी जायेंगी , जिस ने किसी जीवित या मृत से यह चीजें मांगीं वह उस की पूजा करने वाला माना जायेगा । अल्लाह तआला अपने उपासकों (बन्दों) को आदेश दे रहा है कि वे केवल उसी से दुआ करें क्योंकि दुआ उपासना है अतः जिसने किसी गैर से दुआ की वह नरक में होगा, अल्लाह का कथन है: तथा तुम्हारा रब फरमाता है मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूंगा , निस्संदेह जो लोग मेरी उपासना करने से कतराते हैं वे अवश्य अपमानित होकर नरक में प्रवेश करेंगे ।

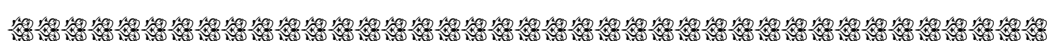
[सूरा गाफ़िर : 60] अल्लाह तआला फरमा रहे हैं कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी को भी



जीवित एवं उपस्थित मनुष्य से उन्हीं चीजों में सहायता मांगना उचित है जिनकी वह क्षमता रखता हो, किन्तु पनाह देने की क्षमता केवल अल्लाह ही के पास है अतः किसी और की पनाह चाहना उचित नहीं है, अनुपस्थित मनुष्य से या जिसकी मृत्यु हो चुकी हो उससे सहायता नहीं मांगी जायेगी और न फरियाद की जायेगी, इसलिए कि वह किसी चीज की क्षमता नहीं रखता चाहे नबी, वली या फरिश्ता ही क्यों न हो।

परोक्ष की बात अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता , यदि किसी ने परोक्ष की बातों का दावा किया तो वह काफिर है उसको झुठलाना आवश्यक है , यदि कोई परोक्ष की चीजों की भविष्यवाणी करे तथा वह वैसी ही हो जाए तो वह एक इत्तिफ़ाक़ मानी जाएगी; अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: “ जो शख्स किसी नुजूमी या ज्योतिषी (गुमशुदा चीज़ों का पता बताने वाले) के पास आया और उसे सच्चा माना उसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारी गई शरीअत का इनकार किया । 20”

उपासना की किस्मों में "अत- तवक्कुल" (भरोसा करना), "अर- रजा" (आशा करना), और विनय एवं नम्रता भी है: इंसान अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे पर भरोसा न करे, अल्लाह के अतिरिक्त किसी दूसरे से आशा न रखे, अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के सामने विनय प्रकट न करे।



अल्लाह तआला ने अपने नबी से फरमाया कि वह लोगों से कह दें: {आप कह दीजिए कि मैं तुम्हारी तरह मनुष्य हूँ (अंतर यह है कि) मेरे पास अल्लाह की ओर से वहाँ आती है कि तुम्हारा माबूद (जिस की पूजा की जाए) ही अकेला सच्चा माबूद है, इसलिए जिसे अपने रब से मिलने की इच्छा हो, उसको चाहिए कि वह अच्छा कर्म करे और अपने रब की उपासना में किसी को भागीदार न बनाए।} [सूरा अल-कहफ़: 110]

मूर्ख लोगों को उनके गुमराह और बुरे विद्वानों (आलिमों) ने धोखा में रखा है , यह विद्वान तो कुछ धार्मिक नियमों को जानते हैं किन्तु तौहीद (एक अल्लाह की इबादत) जो इस्लाम धर्म का आधार है उससे अपरचित हैं , शिर्क के अर्थ से अज्ञानता के कारण सिफ़ारिश एवं वसीला (माध्यम) के नाम पर शिर्क का निमंत्रण देते हैं। और इन बातों के लिए उनके तर्क हैं कुछ आयतों और हदीसों की ग़लत व्याख्या, झूठी हदीसें, कथाएं एवं सपने जो शैतान ने उनके सामने सजा कर पेश किए और इसी तरह की दूसरी गुमराहियाँ जो उन्होंने अपनी



जो यह काम कर रहे हैं वे मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) हैं गुमराह हैं , चाहे वह इस्लाम का दावा करें , नमाज़ , रोज़ा एवं हज की पाबन्दी करें , ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह जुबान से कहते रहें , क्योंकि जुबान से केवल ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह कह देने से कोई मुवहिहद (एक अल्लाह की इबादत करने वाला) नहीं होगा अपितु उसका अर्थ जानना और उसके अनुसार कार्य करना आवश्यक है , गैर मुस्लिम यदि हो तो केवल कलमा शहादत को अदा करते ही मुसलमान समझा जायेगा यहाँ तक कि उससे कोई ऐसा काम हो जाये जिससे उसका पुराने शिर्क पर स्थिर रहना मालूम हो, या इस्लाम के किसी विषय की अनिवार्यता को बताये जाने के बाद भी उस का इंकार करे , या इस्लाम धर्म के अतिरिक्त किसी और धर्म पर भी ईमान ले आये तब वह इस्लाम से निष्कासित माना जायेगा ।

और नबी तथा वली उन से मुक्त हैं जो उन्हें पुकारते हैं अथवा उनसे मदद मांगते हैं, क्योंकि अल्लाह तआला ने अपने रसूलों को इसलिए भेजा कि वे लोगों को एक अल्लाह की इबादत की ओर बुलाएं और उसके अलावा दूसरों की उपासना छोड़ने का निमंत्रण दें, चाहे वे नबी हों, वली हों या कोई और।

और रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- एवं औलिया जो उनके अनुयायी हैं उनसे प्रेम का प्रमाण यह नहीं कि उन की उपासना की जाए, बल्कि यह उनके साथ दुश्मनी



और हमारा यह ईमान है कि हमपर रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- से स्वयं, अपने परिवार, बच्चों और सारे लोगों से भी अधिक मोहब्बत करना अनिवार्य है।

मुक्ति पाने वाला वर्ग

और नबी -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- तथा उन के सहाबा का मार्ग यह है कि "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह" के अर्थ को विश्वास हो और कार्य भी उसके अनुसार हो कि केवल अल्लाह को पुकारा जाए, उसी के लिए ज़बह किया जाए, नज़र मानी जाए, उसी से मदद मांगी जाए, उसी की शरण ली जाए, यह विश्वास हो कि नफा-नुकसान मालिक वही है, इखलास के साथ इस्लाम के स्तंभों पर अमल किया जाए, अल्लाह के फरिश्तों, किताबों, रसूलों, पुनरुत्थान, हिसाब-किताब, जन्नत-जहन्नम और अच्छे-बुरे भाग्य पर विश्वास हो कि दोनों ही अल्लाह के हाथ में हैं। हर मैदान में क़ुरआन तथा हदीस ही को

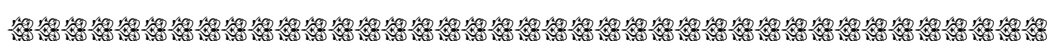


ला इलाहा इल्लल्लाहु के अर्थ में इस बात का भी आस्था रखना और उसपर अमल करना आवश्यक है कि : कानून बनाने का इख्तियार केवल अल्लाह तआला को है , किसी मानव को यह अधिकार नहीं है कि वह ऐसा कानून बनाये जो इस्लामी शास्त्र के विरूद्ध हो , किसी मुसलमान के लिए वैध नहीं है कि अल्लाह के कानून से हट कर फैसला करे और इस्लामी शरीअत के विरूद्ध किसी आदेश से प्रसन्न हो और न किसी को यह अधिकार है कि वह हलाल को हराम करार दे या हराम को हलाल ठहराए , जो कोई यह अवैध कार्य करेगा जान बूझकर धर्म के विरोध की नीयत से या उससे प्रसन्न होगा वह काफिर हो जायेगा , अल्लाह तआला फरमाता है: तथा जो कोई अल्लाह के उतारे हुए आदेशों के अनुसार न्याय न करे तो वह काफिर है । सूरतुल माइदा: 44



कि वे कलमये तौहीद (ला इलाहा इल्लल्लाह) तथा उस के अर्थ के अनुसार कार्य करने का निमंत्रण दें, यानि एक ही अल्लाह की उपासना की जाये तथा सृष्टि की उपासना एवं उसके बनाए हुए कानून को छोड़ उसी के शास्त्र को आदेश बनाया जाये वह अकेला है, कोईर उस का शरीक नहीं।

जो कुरआन को दूरदर्शिता के साथ पढ़ेगा तथा अंधविश्वास से मुक्त होगा वह यह समझ जाएगा कि हमने जो कुछ बयान किया वही सत्य है और यह बात भी उसपर प्रकट होगी कि अल्लाह तआला ने अपने तथा इनसान के एवं इनसान और दूसरे लोगों के संबंध को सीमित किया है। अल्लाह और मोमिन (अल्लाह पर विश्वास रखने वाले) बंदे का संबंध यह है कि वह केवल एक अल्लाह की उपासना करे , उसका तथा नबियों एवं नेक बंदों का



"मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं", इस गवाही का अर्थ:

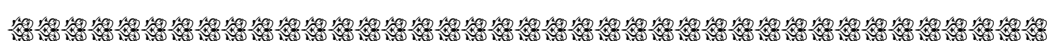
"मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं", इस गवाही का अर्थ यह है कि आप इस बात का ज्ञान एवं विश्वास रखें कि मुहम्मद सारे लोगों के रसूल हैं और वह बंदा हैं उनकी उपासना न की जाये , रसूल हैं इसलिए झुठलाये न जायें बल्कि उनका अनुसरण किया जाये , जिसने उनकी पैरवी की वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा , जिसने उनकी अवज्ञा की वह आग में होगा और इस बात का भी ज्ञान एवं विश्वास हो कि विधान चाहे उपासना से संबंधित हो , निर्देश एवं राजनीति या वैध एवं अवैध करने से संबंधित हो, केवल रसूल **صلی الله علیه وسلم** से लिया जाएगा , क्योंकि वह अल्लाह के रसूल हैं , अल्लाह की ओर से शरीयत (विधान) पहुंचाते हैं अतः जो कानून अल्लाह के रसूल के माध्यम से न पहुंचा हो वह स्वीकृत नहीं है , अल्लाह तआला फरमाता है: "और रसूल जो प्रदान कर दें, तुम उसे ले लो और जिससे तुम्हें रोक दें, तुम उससे रुक जाओ तथा अल्लाह से डरते रहो। निश्चय अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।" [सूरा अल-हश्र : 7] अल्लाह तआला का फ़रमान है : (ऐ पैगंबर) तुम्हारे रब की कसम वे मोमिन नहीं होंगे जब तक आपसी झगड़ों में आप को पंच एवं निर्णय करने वाला न बना लें , फिर आप के निर्णय से दिलों में कोई संकीर्णता महसूस न करें और प्रसन्नता के साथ उसे स्वीकार कर लें । सूरतन-निसा: 65

1- पहली आयत में अल्लाह तआला मुसलमानों को हुकम देता है कि वे उसके हम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- के हर आदेश का पालन करें एवं हर उस चीज़ जाएं जिससे वह रोकें क्योंकि आप -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- अपने रबके से ही ऐसा करते हैं।



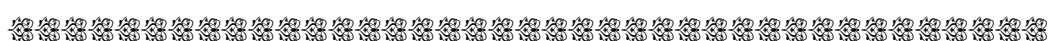
ऐ बुद्धिमान ! जब आप को " ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह " का अर्थ मालूम हो गया और इससे भी परिचित हो गये कि ' शहादत ' (गवाही) इस्लाम की कुंजी है , उसका आधार है , जिस पर इस्लाम धर्म का भवन स्थित है तो आप को चाहिए कि पवित्र हृदय से " अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह व अशहदु अन्ना मुहम्मदुर रसूलुल्लाह " कहें तथा इस ' शहादत ' के अनुसार कार्य करें ताकि लोक एवं परलोक में आप को कल्याण प्राप्त हो और परलोक में यातना से मुक्ति भी मिले ।

यह भी मालूम होना चाहिए कि " ला इलाहा इल्लल्लाह " की गवाही की मांग है कि इस्लाम के सभी आधारों पर अमल किया जाये , अल्लाह ने इन आधारों को इसीलिए अनिवार्य किया है कि मुसलमान इन्हें सत्यता एवं निर्मलता के साथ अदा करके अल्लाह तआला की उपासना करे , जिसने बिना किसी स्वीकार्य बाधा के किसी भी आधार को छोड़



★ ★ ★

नमाज़ इस्लाम धर्म का स्तंभ है , " कलमये तौहीद " के बाद सब से मुख्य आधार यही है , मुसलमान पर अनिवार्य है कि युवावस्था में पहुंचने के बाद से मृत्यु तक इसकी पाबन्दी करे , उसपर आवश्यक है कि वह अपने घर के लोगों को इसका आदेश दे और जब बच्चे सात वर्ष के हो जायें तो उन्हें भी इसकी शिक्षा दे ताकि उन्हें इस की आदत हो जाए । अल्लाह तआला फरमाता है : निःसंदेह नमाज मोमिनों पर निश्चित समय में अनिवार्य है । [सूरा अन-निसा : 103] एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान है : हालांकि उन्हें यही आदेश दिया गया था कि एक अल्लाह की उपासना करें पूर्ण तन्मयता के साथ धर्म को उसके लिए शुद्ध करते हुए तथा नमाज़ को स्थापित करें , ज़कात अदा करें और यही सीधा धर्म है। सूरा अल-बय्यिना: 5



सूर्य डूबने से आरम्भ हो जाता है तथा आकाश की लाली समाप्त होने तक रहता है, अंतिम समय तक विलम्ब करना सही नहीं है, मगरिब का समय समाप्त होने के बाद इशा का समय आरम्भ होता है तथा आधी रात तक बाकी रहता है इससे अधिक विलम्ब नहीं किया जा सकता।

यदि किसी मुसलमान ने, बिना किसी धार्मिक स्वीकार्य कारण के जो उसके बस के बाहर हो, नमाज में इतना विलम्ब कर दिया कि उसका समय निकल जाये तो उसने महा अपराध किया, उस पर आवश्यक है कि वह तौबा करे और दोबारा इस प्रकार का अपराध न करे। अल्लाह तआला का कथन है: कठिन यातना है उन नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ से अचेत हैं। सूरतुल माऊन: 4-5



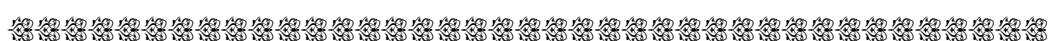
नमाज़ के अहकाम (विधान)

पहला: तहारत (पवित्रता)

नमाज़ में प्रवेश करने से पहले मुसलमान पर आवश्यक है कि वह पवित्रता प्राप्त करे, अपने गुप्तांग को साफ करे यदि उससे पेशाब या पैखाना निकला हो फिर वजू करे।

वजू: अपने दिल में पवित्रता प्राप्त करने की नियत करे जुबान से कुछ न कहे इसलिए कि अल्लाह दिल के संकल्प को जानने वाला है, अल्लाह के रसूल صلی اللہ علیہ وسلم जुबान से नियत को प्रकट नहीं करते थे, फिर बिसमिल्लाह कहे फिर कुल्ली करे, नाक में पानी डाले और नाक झाड़े, पूरे चेहरे को धोये, दोनों हाथों को कोहनियों तक धोये, दाहिने हाथ से शुरू करे, दोनों हाथों से पूरे सिर का मसह करे (सिर पर भीगे हाथ फेरे), कानों का मसह करे, दोनों पावों को टखनों तक धोये, दाहिने पाँव से शुरू करे।

वजू के बाद यदि हवा, पेशाब, पैखाना निकल जाये या नींद और बेहोशी के कारण बुद्धि जाती रहे तो नमाज के लिए उसे दोबारा वजू करना है। यदि मुसलमान जनाबत

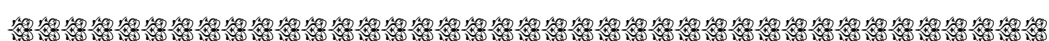


तयम्मूम : जिसे पानी न मिले या पानी का प्रयोग उसके लिए हानिकारक हो जैसे कोई बीमार हो तो ऐसी अवस्था में वह तयम्मूम के द्वारा पवित्रता प्राप्त करेगा । तयम्मूम का तरीका : दिल में पवित्रता की नियत करे फिर बिसमिल्लाह कहे , मिट्टी पर दोनों हाथों को एक बार मारे , उन्हें चेहरे पर मले फिर बाईं हथेली से दायें हाथ के ऊपरी भाग पर मसह करे और दायीं हथेली से बायें हाथ के ऊपर मसह करे , इस प्रकार उसे पवित्रता प्राप्त हो जायेगी और यही तयम्मूम का तरीका है , मासिक धर्म एवं प्रसव रक्त वाली महिला के लिए जब वह पवित्र हो जाए (जब खून आना बंद हो जाए) तथा ' जुंबी ' (जिस का वीर्य निकला हो) के लिए भी और उस व्यक्ति के लिए भी जो वजू करना चाहे मगर उसे पानी न मिले या उसके प्रयोग से क्षति का भय हो ।

दसरा: नमाज़ का तरीका

1- फज्र की नमाज़:

इस में दो रकअतें हैं। पुरुष अथवा महिला क़िबला (काबा) के सम्मुख खड़ा होगा, दुल में नीयत करेगा कि अभी फ़ज्र -सुबह- की नमाज़ पढ़ने वाला हूँ, ज़बान से नहीं बोलेगा फिर कहेगा: "अल्लाहु अकबर" फिर नमाज़ आरंभ करने वाली कोई दुआ पढ़ेगा जैसे:



"सुबहानकल्लाहुम्मा वबिहमदिक, वतबारकसमुक, वतआला जद्दुक, वलाइलाहा गैरुक" (फिर पढ़ेगा) अऊज़ु बिल्लाहि मिनशैतानिर रजीम फिर सूरा फ़ातिहा पढ़ेगा, जिनका अर्थ निम्नलिखित है: "शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु एवं अति कृपावान है।" "सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, जो सारे संसारों का पालनहार है।" जो अत्यंत कृपाशील तथा दयावान है। बदले (क्रियामत) के दिन का स्वामी है। "हम तेरी ही उपासना करते हैं तथा तुझ ही से सहायता मांगते हैं।" हमें सीधा मार्ग दिखा। उन लोगों का मार्ग जिन पर तेरा अनुग्रह उतरा, उन लोगों का मार्ग नहीं जिन पर तेरा प्रकोप हुआ, और न उन लोगों का मार्ग जो पथभ्रष्ट हुए। सूरा फ़ातिहा: 1-7 कुरआन अरबी भाषा में पढ़ना अनिवार्य है यदि मुमकिन हो, फिर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए रुकू करेगा अतएब अपना सिर तथा अपनी पीठ ज़मीन की ओर झुकाएगा और अपनी हथेलियाँ अपने घुटनों पर रखते हुए कहेगा: "सुबहाना रब्बियल अज़ीम", फिर "समिअल्लाहु लिमन हमिदह" कहते हुए सिर उठाएगा एवं सीधे खड़ा होने के बाद कहेगा: "रब्बना वलकल हमद" फिर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए नाक, माथा, हथेलियाँ, घुटने तथा पैरों और हाथों की उंगलियाँ ज़मीन पर रख कर सजदा संपन्न करेगा और सजदा करते हुए पढ़ेगा: "सुबहाना रब्बियल आ'ला" फिर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए बैठेगा और इस दौरान पढ़ेगा: "रब्बिग़ाफ़िर ली" फिर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए ज़मीन पर दूसरा सजदा करेगा और पढ़ेगा: "सुबहाना रब्बियल आ'ला", फिर "अल्लाहु अकबर" कहते हुए खड़ा होगा, फिर सूरा फ़ातिहा पढ़ेगा, फिर पहली रकअत जैसे तकबीर कहेगा, रुकू करेगा, सिर उठाएगा, सजदा करेगा, बैठेगा फिर दोबारा सजदा करेगा और पिछली दुआएं दोहराएगा।

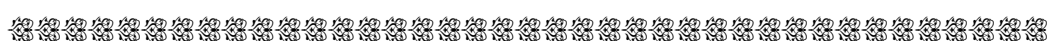
(दूसरी रकअत के दूसरे सजदे के बाद) बैठ कर यह दुआ पढ़ेगा जिसका अर्थ है: "हर तरह का सम्मान, समग्र दुआएँ एवं समस्त अच्छे कर्म व अच्छे कथन अल्लाह के लिए हैं। हे नबी! आपके ऊपर सलाम, अल्लाह की कृपा तथा उसकी बरकतों की वर्षा हो, हमारे ऊपर एवं अल्लाह के भले बंदों के ऊपर भी सलाम (सलामती) की जलधारा बरसे, मैं साक्षी

२. जोहर, अस तथा इशा की नमाज़ :

चार-चार रकअतें हैं, पहले दो रकअतें उसी प्रकार अदा करेगा जिस प्रकार फन्न की दो रकअतें अदा की थीं किन्तु 'तशहहुद' में बैठने और उसकी दुआयें पढ़ने के बाद सलाम नहीं फेरेगा बल्कि खड़ा हो जायेगा तथा तीसरी एवं चौथी रकअत पढ़ेगा जैसाकि पहली दो रकअतें पढ़ी थीं फिर अंतिम रकअत में 'तशहहुद' के लिए बैठेगा 'अत्तहीयात' (जो दुआ पहली दो रकअतों के बाद बैठ कर पढ़ी थी) पढ़ेगा, फिर दुरूद पढ़ेगा फिर दायें - बायें सलाम फेरेगा।

३. मगरिब की नमाज़ :

मगरिब की नमाज़ में तीन रकअतें होती हैं दो रकअतें वैसे ही पढ़ेगा जैसाकि ऊपर बयान हो चुका है फिर 'तशहहूद' में बैठेगा, 'तशहहूद' पढ़ने के बाद तीसरी रकअत के लिए खड़ा हो जायेगा तीसरी रकअत में वही कुछ करेगा जो इससे पहले कि रकअतों में कर चुका है, दूसरे सजदे के बाद 'तशहहूद' में बैठेगा, अत्तहीयात, दुरूद और दुआ के बाद दायें बायें सलाम फेरेंगे, रूकूअ एवं सुजूद की दुआयें बार - बार दोहरायेगा क्योंकि बार - बार दोहराना ज्यादा अफजल है।



परस्पर सामाजिक तथा आर्थिक सहयोग के संबंध में इस्लाम धर्म ने केवल ज़कात ही पर ठहराव नहीं किया है बल्कि धनवानों पर अनिवार्य कर दिया है कि अकाल के समय निर्धनों की सहायता करें, मुसलमान पर हराम है कि वह पेट भर खाये जब कि उसका पड़ोसी भूखा हो, मुसलमानों पर जकात ए फितर भी अनिवार्य किया गया जो ईदुल फित्र (रमज़ान के बाद वाली ईद) के दिन अदा करेगा जिसकी मात्रा एक ' साअ ' है जो खाने वाली आम चीजों में से अदा करेगा, फ़ितरा हर व्यक्ति की ओर से अदा की जायेगी, यहाँ तक कि बच्चा एवं नौकर की ओर से भी उसका मालिक अदा करेगा, मुसलमान पर अनिवार्य है कि वह कसम का कपफारा भी अदा करे यदि उसने कसम खाई हो फिर उसे तोड़ दिया हो। अल्लाह ने मुसलमानों पर सटीक नज़र (मन्नत) को पूरा करना भी अनिवार्य किया है, तथा नफली ' सदका ' व ' खैरात ' पर भी उभारा है, अल्लाह के मार्ग में खर्च करने वालों को बेहतरीन बदले का वादा है, अल्लाह ने उन्हें यह वचन दिया है कि वह उन्हें कई गुना प्रतिदान से सम्मानित करेगा, हर नेकी का बदला दस गुना से सात सौ गुना है बल्कि इससे भी अधिक होता है।



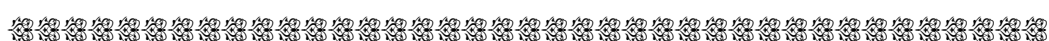
इस्लाम का चौथा स्तम्भ: रोज़ा

रमज़ान महीने का रोज़ा रखना, जोकि हिजरी वर्ष का नौवाँ महीना है।

रोजे का तरीका:

मुसलमान रोजे की नियत सुबह होने से पहले करता है, फिर खाने - पीने और संभोग करने से सूरज डूबने तक बचा रहता है, फिर इफ्तार करता है, यह कर्म पूरे महीने करता है, इसका उद्देश्य अल्लाह की उपासना एवं प्रसन्नता की प्राप्ति है।

रोजे के अनगिनत लाभ हैं। कुछ मुख्य लाभ निम्नलिखित हैं:



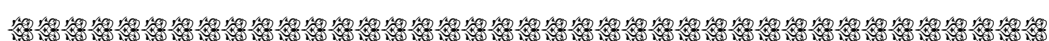
१. यह अल्लाह की उपासना एवं उसके आदेश का अनुपालन है, अल्लाह के लिए बन्दा अपना खाना - पीना और संभोग आदि को त्याग देता है इसतरह यह तक्रवा (संयमता) के मुख्य कारणों में से है।

२. रोज़ा से शारीरिक, आर्थिक एवं सामूहिक स्तर पर बहुत से लाभ हैं, इसका बोध वही लोग कर सकते हैं जो ईमान एवं विश्वास के साथ रोज़ा रखते हैं, "ऐ ईमान वालो! तुम पर रोजे अनिवार्य किए गए, जैसा कि तुमसे पहले के लोगों पर अनिवार्य किए गए थे, आशा है कि तुम संयमी एवं धर्मपरायण बन जाओ।" गिनती के कुछ दिन हैं। फिर यदि तुम में से कोई रोगी अथवा यात्रा पर हो, तो ये गिनती, दूसरे दिनों से पूरी करे और जो उस रोजे को सहन न कर सके[1], वह फ़िद्या (प्रायश्चित्त) दे, जो एक निर्धन को खाना खिलाना है और जो स्वेच्छा भलाई करे, वह उसके लिए अच्छी बात है। यदि तुम समझो, तो तुम्हारे लिए रोज़ा रखना ही अच्छा है। रमजान का महीना वह महीना है जिसमें कुरआन उतारा गया, लोगों के मार्गदर्शन (हिदायत) के लिए, इसमें हिदायत की खुली - खुली दलीलें हैं और सत्य को असत्य से पहचानने का तर्क, तुममें से जो इस महीना में उपस्थित रहे (यात्रा) पर न हो) वह रोज़ा रखे और जो बीमार हो या यात्रा में हो तो वह रोज़ों की गिनती दूसरे दिनों में पूरी करे, अल्लाह तआला तुम्हारे लिए सरलता चाहता है कष्ट देना नहीं चाहता है और यह चाहता है कि तुम रमजान की गिनती पूरी करो तथा अल्लाह की बड़ाई बयान किया करो इस उपकार पर कि तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाया और इसलिए कि तुम उसका शुक्र अदा कर सको। सूरतुल बक्ररह: 183-185



रोज़े के कुछ अहकाम (विधान) जिनका वर्णन कुरआन एवं हदीस में है:

1- बीमार तथा मुसाफिर रोज़ा छोड़ेगा और रमजान के बाद दूसरे दिनों में उसे पूरा करेगा। इसी प्रकार हैज़ तथा निफास वाली औरत दूसरे दिनों में अपने रोजे पूरे करेगी।



नबी -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- अपने साथियों को इसी का आदेश दिया और इसी को उनपर अनिवार्य किया और जिस ने इस आदेश के अनुपालन में विलंब किया उससे नाराज़ हुए मगर जिसके साथ हृदि का जानवर हो वह क़ारिन होगा जैसाकि आप -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- ने किया। क़ारिन: वह व्यक्ति है जो तलबिया पढ़ते समय कहे: "अल्लाहुम्मा लब्बैका उमरतन वहज्जन" और एहराम की पाबंदियों से ईद के दिन कुरबानी करने से पहले आज़ाद नहीं होता।

मुफ़रिद: वह व्यक्ति है जो केवल हज की नियत करे और कहे: "अल्लाहुम्मा लब्बैका हज्जन"।



मुहरिम पर वर्जित कार्य:

मुसलमान जब एहराम की नियत कर लेता है तो उस पर निम्नलिखित चीज़ें हराम हो जाती हैं:

१ . जिमाअ (संभोग) और उसका कारण बनने वाले कार्य जैसे चुंबन लेना और वासना से छूना तथा वासना से सम्बंधित बातें करना , शादी विवाह का पैगाम देना , निकाह करना , मुहरिम न स्वयं निकाह करेगा न दूसरों का निकाह करायेगा ।

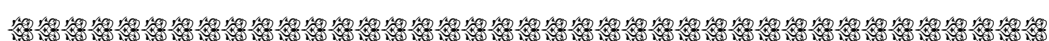
२ . बाल मुंडाना या उसकी काट - छांट करना ।

3- नाखून काटना।

४ . ऐसी चीज़ से सिर ढांकना जो सिर से चिमटी हो , किसी चीज़ से छाँव प्राप्त करने में कोई दोष नहीं है , जैसे छतरी , खैमा तथा गाड़ी आदि ।

५ . खुशबू लगाना या सूँघना ।

६ . सूखे में शिकार, न स्वयं शिकार करेगा और न शिकार करने वाले को बतायेगा ।



, यह दो दिन मिना में ठहरना अनिवार्य है। ग्याहरहवें और बारहवें दिन तीनों जमरात को जवाल (सूरज ढलने) के बाद कंकरी मारेगा। छोटे जमरा से आरम्भ करेगा जो मिना की ओर से पहला है फिर बीच वाले जमरा को फिर जमरये अक्रबा को जिसे ईद के दिन मारा था हर जमरा को सात - सात कंकरियाँ मारेगा, हर कंकरी के साथ तकबीर कहेगा, कंकरियाँ मिना में अपने स्थान से साथ ले ले। जिसे मिना में स्थान न मिले वह जहाँ हाजियों के खेमे समाप्त हों उसके निकट स्थान ग्रहण करे।

बारहवें दिन कंकरियाँ मार कर वह मिना से लौट सकता है और यदि तेरहवें दिन तक ठहर जाये तथा तेरहवें दिन भी सूरज ढलने के बाद कंकरी मार कर जाये तो अधिक अच्छा है। यात्रा करने से पहले तवाफे विदा करना आवश्यक है, मासिक धर्म एवं प्रसव रक्त वाली महिलायें तवाफे इफाजा और सर्ई अगर पहले ही कर चुकी हैं तो अब उसे तवाफे विदा से छूट है।

हाजी यदि ग्यारह, बारह अथवा तेरह तारीख तक भी हदि (कुरबानी का जानवर) जबह करे तो जाएज (वैध) है। हज का तवाफ़ और सर्ई भी मिना से निकलने तक बिलंबित करना जाएज है, . किन्तु उत्तम वही है जो हम ने ऊपर बयान किया है।

और अल्लाह तआला ही सबसे ज़्यादा और बेहतर जानता है। तथा अल्लाह की कृपा और शांति (दुरूद व सलाम) हो (हमारे नबी) मुहम्मद पर और आपके सम्स्त परिजनों एवं सभी सहाबा (साथियों) पर।



ईमान

अल्लाह तआला ने एक मुसलमान पर अनिवार्य किया है कि अल्लाह, उसके रसूल तथा इसलाम के सभी स्तम्भों पर ईमान रखने के साथ अल्लाह तआला के फ़रिश्तों और उस की किताबों पर भी ईमान लाए जो उसने अपने रसूलों पर उतारी हैं, जिन में अंतिम किताब कुरआन है जिस से पिछली सारी किताबें मनसूख (निरस्त) हो गईं और जिसे



उसकी अवज्ञा से बचते हैं और यदि कभी कोई भूल हो जाये तो तुरन्त तौबा करते हैं अपनी भूल पर लज्जित होते हैं, अल्लाह से क्षमा चाहते हैं तथा दोबारा उसके निकट नहीं जाते। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: अल्लाह संयमी और भला काम करने वालों के साथ है। सूरा अन-नहल: 128



इस्लाम एक सम्पूर्ण धर्म:

अल्लाह तआला कुरआन ए करीम में फरमाता है: {मैंने आज तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को संपूर्ण कर दिया तथा तुमपर अपना पुरस्कार पूरा कर दिया है और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म स्वरूप चुन लिया है।} [सूरा अल-माइदा : 3] एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान है : {निःसंदेह, यह कुरआन सबसे सही मार्ग का अनुदेश देता है तथा नेक काम करने वाले मोमिनों को शुभ सूचना देता है कि उन्हें महान प्रतिकार मिलेगा।} [सूरा अल-इसरा : 9] कुरआन के संबंध में अल्लाह तआला का कथन है: हम ने यह किताब तुमपर उतारी (यानी कुरआन) जिसमें हर चीज का अच्छा बयान है तथा मुसलमानों के लिए वह अनुदेश , कृपा और शुभ सूचना है। [सूरा अन-नहल : 89]

सही हदीस में नबी -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : " मैंने तुम्हें बिल्कुल प्रकाशमय मार्ग पर छोड़ा है जिसकी रात भी दिन की तरह है इससे जो भी भटकता है वही हलाक होता है" । और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "मैं तुम्हारे बीच दो चीजें छोड़ता हूँ जब तक इन्हें थामे रहोगे गुमराह नहीं होगे: अल्लाह की किताब (कुरआन) एवं उसके नबी की सुन्नत (हदीस)" ।

उपरोक्त आयतों में से:

पहली आयत में अल्लाह तआला सूचित कर रहा है कि उसने मुसलमानों के लिए इस्लाम धर्म को पूरा कर दिया है , इसमें कोई कमी नहीं है और न इसमें किसी बढ़ोत्तरी की



अल्लाह ने मुसलमान को यह आदेश दिया कि दूसरों से उसका संपर्क अल्लाह तआला पर ईमान के आधार पर हो, वह नेक एवं सदाचारी, अल्लाह एवं रसूल के आज्ञापालन करने वाले बन्दों से मैत्री रखेगा, चाहे उनसे कितनी ही दूर का संबंध क्यों न हो एवं काफिरों और अल्लाह एवं रसूल के अवज्ञाकारियों से बैर एवं शत्रुता रखेगा चाहे वह निकटवर्ती ही क्यों न हों। यही वह संबंध है जो विभिन्न प्रकार के लोगों को मिलाता है और नाना प्रकार के लोगों से संबंध स्थापित कराता है, इसके विपरीत देश, परिवार एवं व्यक्तिगत लाभों का सम्बन्ध है जो शीघ्र ही टूट जाता है।

अल्लाह तआला ने फरमाया : जो लोग अल्लाह एवं अंतिम दिन पर विश्वास रखते हैं उन्हें आप नहीं पायेंगे कि वे उन लोगों से मैत्री रखते हों जो अल्लाह एवं रसूल के शत्रु हैं चाहे वे उनके बाप - दादा हों या बेटे हों या भाई हों या परिवार वाले हों। सूरतुल मुजादिला: 22 एक अन्य स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान है : अल्लाह के निकट तुम में सबसे अधिक सम्मानित सब से अधिक तक्रवा (अल्लाह के आदेश- निषेध के अनुसार जीवन बिताने) वाला है। [सूरा अल-हुजुरात : 13]

पहली आयत में अल्लाह तआला सूचित करता है कि अल्लाह पर ईमान रखने वाला अल्लाह के शत्रुओं से प्रेम नहीं रखता चाहे वे सबसे निकटवर्ती ही क्यों न हों।

और दूसरी आयत में फरमाता है कि उसके निकट सबसे प्रिय एवं सम्मानित उस का आज्ञाकारी है, वह किसी भी रंग व नसल का हो।

और अल्लाह तआला ने बंधु तथा शत्रु दोनों के साथ न्याय करने का आदेश दिया है एवं अन्याय को स्वयं पर भी तथा बंदों के बीच भी हराम (अवैध) ठहराया है, आमानतदारी और सच्चाई का हुक्म दिया है, बेईमानी से रोका है, माता-पिता के साथ अच्छा सलूक करने, रिश्ते निभाने, गरीबों का खयाल रखने, समाज सेवा के कामों में अंश लेने और हर चीज यहाँ तक कि जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया है और जानवरों को कष्ट देने से रोका है, मगर हानिकारक जानवर, जैसे काटने वाला कुत्ता, साँप, बिच्छू, चुहिया, चील, छिपकली, इन्हें क्षति से बचने के लिए मारा जाएगा लेकिन यातना नहीं दी जाएगी।

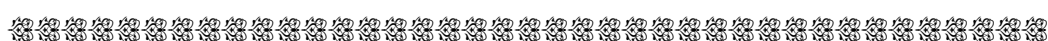
4- अल्लाह के संरक्षण का अनुभव और मोमिन के दिल की चेतावनी :

कुरआन में बहुत सी आयतें इसकी स्पष्टता करती हैं कि अल्लाह तआला बन्दों को देख रहा है वे जहाँ कहीं भी रहें, वह उनके कर्मों एवं नियतों को जानता है, उनके कर्मों एवं कथनों की गणना करता है, फरिश्ते हमेशा उनके साथ रहते हैं, खुले - छिपे हर काम को लिखते हैं, अल्लाह तआला उनके हर काम एवं कथन का निकट ही में हिसाब करेगा, उन्हें कष्टदायक यातना से धमकाया है यदि वे अल्लाह की अवज्ञा करें, उसका विरोध करें। यह चीजें मोमिनों को पापों से बचाने का मुख्य कारण हैं, वे अल्लाह के भय से विरोधों एवं अपराधों से बचे रहते हैं।

मगर जो अल्लाह तआला से नहीं डरता बल्कि जब भी अवसर मिलता है गुनाह करता है ऐसे लोगों के लिए अल्लाह तआला ने रुकावट बनाई है। वह इस तरह कि मुसलमानों को आदेश दिया है कि भले काम का हुक्म दें एवं बुराई से रोकें, अतः हर मुसलमान को यह एहसास होना चाहिए कि जब भी किसी को कोई गलती करते देखे उसे रोकना उस का कर्तव्य है, यदि हाथ से न रोक सके तो जुबान से ही सही। एवं अल्लाह तआला ने मुसलिम शासक को आदेश दिया है कि विरोध करने वालों के ऊपर अल्लाह की हदें (जुर्म के अनुसार निर्धारित दंड जिन का वर्णन कुरआन तथा हदीस में है) लागू करे। इसके बाद ही न्याय, शांति तथा खुशहाली आएगी।

5- सामाजिक सहयोग :

अल्लाह तआला ने मुसलमानों को आपस में आंतरिक तथा आर्थिक सहयोग का आदेश दिया है जिसकी चर्चा सदक्कात एवं जकात के अध्याय में की जा चुकी है , अल्लाह ने मुसलमानों पर किसी भी इंसान को किसी भी प्रकार की पीड़ा देना हaram कर रखा है , यहाँ तक कि रास्ते में कोई कष्टदायक चीज हो तो अल्लाह ने मुसलमानों को उसे भी हटाने का आदेश दिया है चाहे वह कष्टदायक चीज किसी दूसरे ने ही रखी हो एवं इस काम पर सवाब



मुसलमान पर यह अनिवार्य है कि वह अपने भाई के लिए वही चीज पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है तथा उसके लिए वही चीज नापसन्द करे जो अपने लिए नापसन्द करता है। अल्लाह तआला ने फरमाया: नेकी और तक्रवा में एक दूसरे की सहायता करते रहो और गुनाह तथा अन्याय में मदद न करो ओर अल्लाह तआला से डरते रहो निस्संदेह अल्लाह तआला कठिन यातना देने वाला है। [सूरा अल-माइदा : 2] एक अन्य स्थान में अल्लाह तआला ने फरमाया है : निःसंदेह मोमिन आपस में भाई हैं, इसलिए तुम दो भाइयों के बीच सुधार किया करो। सूरतुल हुजुरात: 10 एक अन्य स्थान में अल्लाह तआला ने फरमाया है : बहुत सी काना फूसियों में कोई भलाई नहीं है , हाँ (भलाई यह है कि) इनसान सदक्रा का या किसी नेक काम का या लोगों में सुधार का आदेश दे एवं जो अल्लाह की प्रसन्नता के लिए ऐसा करेगा हम उसे महा प्रतिकार से सम्मानित करेंगे। (सूरतुन-निसा : 114) तथा अल्लाह के रसूल मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फरमाया है : " कोई व्यक्ति उस समय तक मुकम्मल (संपूर्ण) मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिए वही चीज न चाहे जो अपने लिए चाहता है " , और अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- ने अपने महान संबोधन में जो जीवन के अंतिम समय में " हज्जतुल वदाअ " के अवसर पर किया था , विगत आदेशों पर जोर देते हुए फरमाया : "लोगो, तुम्हारा रब एक है, तुम्हारा पिता एक है, सुनो, तक्रवा (अल्लाह के आदेश -निषेध के अनुसार जीवन बीताने) के अलावा किसी और आधार पर किसी अरबी को अजमी (जो अरबी न हो) पर, अजमी को अरबी पर, लाल को काले अथवा काले को लाल पर कोई प्रधानता नहीं, क्या मैंने पैगाम पहुंचा दिया?", लोगों ने कहा: जी, बिल्कुल, ए अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम-। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने और फरमाया : "तुम्हारा खून, माल और इज्जत तुम पर उस दिन तक हराम है जब तुम अपने रब से मिलोगे जैसे आज का दिन इस शहर (मक्के) में इस महीने में हराम है, क्या मैंने पैगाम पहुंचा दिया?",



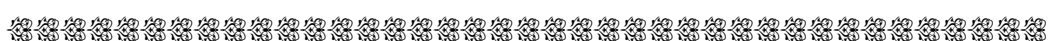
लोगों ने कहा: जी, हाँ, ए अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम-, अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- ने अपनी उंगली से आकाश की ओर इंगित करते हुए फरमाया: "ऐ अल्लाह, तू गवाह रहना" ।

आंतरिक शासन:

अल्लाह तआला ने मुसलमानों को आदेश दिया कि अपने आप पर किसी इमाम (शासक) को नियुक्त करें तथा उससे उसके शासन अनुसार चलने की बैअत (वचन देना) करें और यह भी आदेश दिया कि मिल - जुलकर रहें , टुकड़ियों में विभाजित न हों , एक उम्मत बन कर रहें। अल्लाह ने उन्हें आदेश दिया कि वे अपने शासक एवं सरदारों का आज्ञापालन करें , इस शर्त पर कि वे अल्लाह की अवज्ञा का आदेश न दें क्योंकि अल्लाह तआला की अवज्ञा करते हुए किसी इनसान का आज्ञापालन नहीं किया जाएगा।

अल्लाह ने उस मुसलमान को जो किसी ऐसे देश में हो जहाँ वह अपने दीन (धर्म) को जाहिर न कर सकता हो , उसका निमंत्रण न दे सकता हो वहां से उसे इस्लामी देश की ओर हिजरत (प्रवास) करने का आदेश दिया है , इससे तात्पर्य ऐसे देश हैं जहाँ सारे मामलात में इस्लामी शास्त्र की पाबन्दी की जाती है , तथा मुसलमान शासक अल्लाह के आदेशों के अनुसार हुक्म देता हो ।

इस्लाम राष्ट्रीय एवं जातिगत सीमाबन्दी को स्वीकार नहीं करता , मुसलमान की राष्ट्रीयता केवल इस्लाम है , बन्दे अल्लाह के बन्दे हैं , पृथ्वी अल्लाह की ज़मीन है जिसमें मुसलमान किसी आपत्ति के बिना चल फिर सकता है शर्त केवल यह है कि वह अल्लाह की शरीअत का पाबन्द रहे , यदि किसी मामले में विरोध करे तो उसपर अल्लाह का आदेश लागू होगा , अल्लाह ने जो दंड निर्धारित कर दिया है उसको लागू करने में ही अमन व शांति है , लोगों का सुधार है , प्राणों , सम्पत्तियों एवं प्रतिष्ठाओं की रक्षा है , इसमें नितांत कल्याण एवं भलाई है जबकि इसको छोड़ने में हानि एवं क्षति है ।



अल्लाह तआला ने नशा वाली और बेहोश करने वाली चीजों को हराम करके बुद्धि को सुरक्षित किया है , शराब पीने वालों की सजा चालीस से अस्सी कोड़ों तक तै की है, इसका उद्देश्य उसे सचेत करना, उसकी बुद्धि की सुरक्षा और लोगों को उसकी हानि से सुरक्षित रखना है।

मुसलमानों के खून की रक्षा , इस्लामी शास्त्र क्रिसास (खून, ज़ख्म आदि का बदला) के द्वारा की गई है, हत्यारे को क़त्ल किया जाएगा, इस्लामी शास्त्र के अनुसार ज़ख्मों में भी क्रिसास है, इसी प्रकार मुसलमान को अपने नफ्स , अपनी इज्जत और सम्पत्ति की रक्षा करने की आज्ञा दी गई है , अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ऐ बुद्धिमानों तुम्हारे लिए क्रिसास में जीवन है ताकि तुम मुत्तकी (अल्लाह से डरने वाले) बन जाओ । तथा अल्लाह के रसूल - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : " जो अपने धन की रक्षा करते हुए मारा जाए वह शहीद है, जो अपने धर्म की रक्षा (जैसे कोई उसे काफ़िर होने पर मजबूर करे मगर वह न माने) करते हुए मारा जाए वह शहीद है, जो अपनी जान की रक्षा करते हुए मारा जाए वह शहीद है एवं जो अपने परिवार की रक्षा करते हुए मारा जाए वह भी शहीद है" ।

अल्लाह ने मुसलमानों की इज्जतों को भी सुरक्षा प्रदान की है इस लिए किसी मुसलमान की अनुपस्थिति में उसके संबंध में ऐसी बात करने से मना फरमाया जो उसको पसन्द न हो , उस व्यक्ति पर धार्मिक दंड निश्चित किया जो किसी मुसलमान पर अपराधिक या नैतिक आरोप लगाता है , जैसे बलात्कार तथा बाल मैथुन (लिवातत) आदि का आरोप यदि वह इसे धार्मिक स्तर पर सिद्ध न करे ।

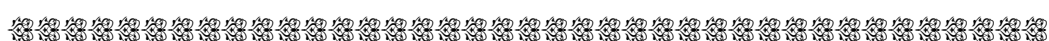
* अल्लाह ने उस मिश्रण से परिवारों को सुरक्षित किया है जो शास्त्र के अनुकूल न हो , जिना (व्यभिचार) को कठोरता से हराम ठहरा कर तथा उसे सबसे बड़े पापों में शामिल कर अल्लाह तआला ने इज्जतों की भी रक्षा की है और यदि ऐसा महा पाप करने वालों में दंड की शर्तें पूरी हो जाएं तो उन पर कठोर दंड निश्चित किया है ।

इस्लाम में प्रवेश करने के बाद मुसलमान को दोबारा मुर्तद् (अधर्मी) बनने की आज्ञा नहीं है, यदि धर्म भ्रष्ट कर ले तो उसका दंड हत्या है, इसलिए कि वह सत्य को जानने के बाद उसे छोड़ने के कारण जीवित रहने के योग्य नहीं रहा सिवाय इसके कि तौबा कर ले तथा इस्लाम की ओर दोबारा लौट आए,

और यदि उसका धर्म भ्रष्ट इस्लाम को तोड़ने वाली किसी चीज़ के करने के कारण हो तो वह उसे छोड़ कर तथा नापसंद कर उससे तौबा करेगा और अल्लाह तआला से माफ़ी मांगेगा।

इस्लाम को तोड़ने वाली (यानी इस्लाम की सीमा से बाहर करने वाली) कुछ प्रसिद्ध चीजें निम्नांकित हैं:

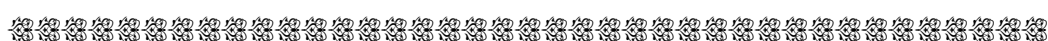
१ : अल्लाह के साथ शिर्क करना । अर्थात बन्दा अल्लाह के साथ किसी और को भी पूजित बनाये , वह अपने और अल्लाह के बीच माध्यम बनाकर उसे पुकारे , उससे दुआ करे , तथा उससे निकटता प्राप्त करने का प्रयास करे तब भी वह शिर्क है , वह पूजित तथा उपासना का अर्थ समझकर उस (माध्यम) की पूज्यता को स्वीकार करे जैसाकि मक्का के मुश्रिक करते थे कि नेक लोगों की मूर्ति बनाकर उनकी उपासना करते थे ताकि वह उन के लिए अभिस्ताव करें , या उनकी पूज्यता को स्वीकार न करे जैसाकि उन मुश्रिकों का दावा है जो इस्लाम से अपने आप को संबंधित करते हैं और जो लोग उन्हें तौहीद की ओर बुलाते हैं उन की बात क़बूल नहीं करते, वे यह समझते हैं कि शिर्क केवल मूर्ति को सजदा करने का नाम है , या बन्दा अल्लाह के अतिरिक्त किसी और चीज के बारे में कहे कि 'ये मेरा पूजित है' केवल यही शिर्क है।



4 . इस्लाम के अलावा किसी अन्य व्यवस्था या शास्त्र को बेहतर समझना या नबी -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- के आदेश की तुलना में किसी और के आदेश को अच्छा समझना , या अल्लाह के आदेश से हटकर न्याय करने को उचित समझना ।

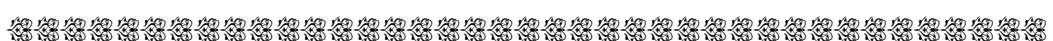


अल्लाह तआला ने विचार - विमर्श की आज्ञा दी दे रखी है इस शर्त के साथ कि वह इस्लामी शिक्षा से न टकराती हो , मुसलमान को उसने आदेश दिया है कि वह हरेक के सामने सत्य बोले , वह अल्लाह के मामला में किसी की परवाह न करे और इसे (सत्य बोलने को) भी सर्वश्रेष्ठ जिहाद करार दिया है , उन्हें आदेश दिया कि मुसलमान शासकों को भी सदुपदेश दिया करें , उन्हें इस्लाम के विरोध से बचने का उपदेश दें , जो किसी झूठी - बात का निमंत्रण दे उसका विरोध करे तथा उसे रोके और विचार - विमर्श के सम्मान का यह सबसे अच्छा



(ग) व्यक्तिगत आज़ादी:

इस्लाम मुसलमानों को धर्म की सीमा को लांघने की आज्ञा नहीं देता इसलिए कि इंसान एवं जो चीजें उसके पास हैं सब वास्तव में अल्लाह की सम्पत्ति हैं, इसलिए ज़रूरी है कि इनसा न के सारे काम धर्म विधान के अनुसार हों, जो अल्लाह तआला ने अपने बंदों पर दया करते हुए तै किया है, जिसने उसे (अल्लाह के विधान को) थाम लिया उसे सौभाग्य तथा हिदायत मिली और जिसने विरोध किया वह बरबाद हो गया और अपनी किस्मत खराब कर



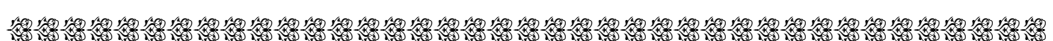
अल्लाह ने इस्लामी धर्म - विधान की सीमाओं में रहकर जीविका अर्जित करने और व्यय करने की आज़ादी दी है , उसे काम करने एवं कमाने का आदेश दिया है ताकि अपने और अपने परिवार वालों का पालन - पोषण कर सके , नेक कामों में व्यय कर सके , लेकिन साथ ही गलत तरीका से कमाई को अल्लाह ने हराम ठहरा दिया है जैसे सूद , जुआ , रिश्त , चोरी , भविष्यवाणी , जादू , व्यभिचार (जिना) और बाल मैथुन (लिवातत) आदि से प्राप्त किया गया माल एवं हराम चीजों के मूल्यों को भी हराम ठहरा दिया है जैसे जीवधारियों के चित्रों का मूल्य , शराब , सूअर , गाने - बजाने के सामान , नाचने और गाने की मज़दूरी आदि सब हराम हैं और जिस प्रकार इन साधनों से कमाना हराम है उसी प्रकार इनमें खर्च करना भी हराम है । मुसलमान के लिए जायेज़ नहीं है कि वह जो धर्म विधान के अनुकूल न हो उस में व्यय करे , यह धर्मोपदेश एवं सदुपदेश का उच्च स्थान है कि इंसान का कमाई एवं व्यय के संबंध में पथ प्रदर्शन किया गया है ताकि हलाल कमाई से संपन्नता के साथ आनंदमय जीवन बिताए ।

(च) पारिवारिक व्यवस्था :

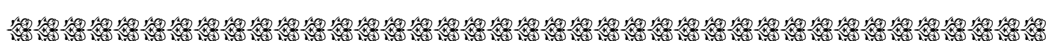
इसलाम में अल्लाह तआला ने परिवार को सबसे संपूर्ण नियम से नियमित किया है , जो यह नियम स्वीकार करते हैं वे भाग्यशाली हो जाते हैं। अतएव माता - पिता के साथ अच्छे बरताव का आदेश दिया है , उनसे अच्छी बात करे , यदि दूर हो तो बराबर उनसे मिलने को आया करे , उनकी सेवा करे , उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करे और यदि वे गरीब हों तो उन पर व्यय करे एवं उनके रहने - सहने की व्यवस्था करे और जो उनकी देख - रेख न करे उसे यातना की धमकी दी गई है और जो उनसे अच्छा बरताव करे उसके सौभाग्य होने की ज़मानत दी गई है । एवं विवाह को मशरू (इसलीमी शास्त्र के अंतर्गत) किया गया है क्योंकि इस के बहुत से लाभ हैं जिनका विस्तृत विवरण कुरआन एवं हदीस में मौजूद है।



विवाह को मशरू'अ (इसलीमी शास्त्र के अंतर्गत) करने की हिकमत (कारण, राज़)



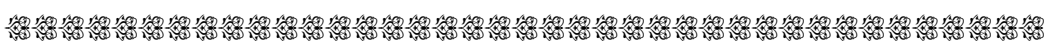
अतः पुरुष घर से बाहर काम करता है, रूपया पैसा अर्जित करता है ताकि पत्नी एवं बच्चों पर व्यय कर सके एवं महिला घर में काम करती है, वह गर्भवती होती है, बच्चा को दूध पिलाती है, बच्चों को प्रशिक्षण देती है, पति के लिए खाने - पीने एवं सोने की व्यवस्था करती है, वह जब थका हारा घर में प्रवेश करता है तो पत्नी एवं बच्चों में घुल मिल कर अपनी थकान एवं परेशानी भूल जाता है, सब मिल जुल कर आनंदमय जीवन बिताते हैं, यदि आपसी सहमती से महिला कुछ काम करके अपने लिए कुछ अर्जित करना चाहे या उससे पति की सहायता करना चाहे तो यह जायेज है, किन्तु शर्त यह है कि वह ऐसा काम करे जिसमें किसी दूसरे पुरुष के साथ मेल - जोल न हो, जैसे अपने घर में या अपने खेत में, या पति के खेत में। लेकिन ऐसा काम जिसमें महिला का पुरुषों के साथ सम्पर्क हो जैसे फैक्ट्री, कार्यालय या व्यापार के स्थान में, तो ऐसा काम जायेज नहीं है, न महिला उसको करे और न पति और परिवार वालों को अनुमति है कि वह उसे आज्ञा दें, इसमें उसकी और समाज की खराबी है, महिला जब तक घर में सुरक्षित है पुरुषों से दूर है तो अत्याचारी हाथ उसकी ओर नहीं बढ़ते, तथा अपभोगी दृष्टियाँ उसकी ओर नहीं उठतीं, लेकिन जब वह लोगों में निकल पड़े तो नष्ट हो सकती है, भेड़ियों के बीच एक बकरी की तरह हो सकती है



यदि पुरुष की एक महिला से जरूरत पूरी न हो तो अल्लाह ने उसके लिए चार पत्नियों तक की आज्ञा दी है , शर्त यह है कि वह खाने - पीने और रहने - सहने में चारों के साथ न्याय करे , हृदय से प्रेम करने में न्याय शर्त नहीं क्योंकि वह इंसान के बस से बाहर की चीज है , इसी न्याय के संबंध में अल्लाह तआला ने फरमाया है कि तुम्हारे अंदर इस की क्षमता नहीं है: तुम से यह हो ही नहीं सकता कि तुम पत्नियों के बीच (पूरा - पूरा) न्याय करो चाहे उसकी इच्छा भी रखते हो । सूरतुन निसा : 129 इस हार्दिक प्रेम में न्याय न कर सकना एक से अधिक विवाह के लिए बाधक नहीं है इसलिए कि यह शक्ति से बाहर की चीज है , अल्लाह ने अपने रसूलों के लिए और जो संसारिक चीजों में न्याय कर सकता है उसके लिए एक से अधिक विवाह की आज्ञा दी है , क्योंकि अल्लाह तआला को इंसानों के हितों का अधिक ज्ञान है और इस (अज्ञा) में पुरुषों तथा महिलाओं, दोनों की भलाई है , इसलिए कि स्वस्थ पुरुष में काम वेग की शक्ति इतनी होती है कि वह चार पत्नियों की इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है और इस प्रकार वह चार महिलाओं की सदाचारिता का करण बन सकता है अतः जब उसे केवल एक ही की अनुमति हो, -जैसा कि ईसाइयों आदि के यहाँ है, और कुछ इसलाम के दावेदार इस का नारा लगाते हैं- तो निम्नांकित हानियों का भय है:

1- यदि मोमिन हो , अल्लाह का आज्ञाकारी हो तो जीवन में कुछ कमी महसूस करेगा और अपनी हलाल इच्छा को भी दबाना पड़ेगा , इसलिए कि एक पत्नी हो तो गर्भ के अंतिम महीनों में , निफास (प्रसव रक्त), हैज (मासिक धर्म) और बीमारी की हालत में पति की इच्छा पूरी नहीं हो सकती, यह उस अवस्था में जबकि दोनों एक - दूसरे से प्रेम रखते हों , और यदि आपस में प्रेम न हो तो समस्या इस से भी अधिक हानिकारक हो जाती है ।

2- यदि पुरुष अल्लाह का अवज्ञाकारी एवं अपभोगी हो तो वह हरामकारी एवं जिनाकारी में लिप्त हो जाता है तथा अपनी पत्नी से मुंह मोड़ लेता है , अधिकतर लोग जो



पत्नी की बहुलता को नाजायेज समझते हैं हरामकारी में लिप्त हो जाते हैं , और इस भी बड़ा विषय यह है कि यदि ज्ञान होने के बावजूद वह पत्नियों की बहुलता का विरोध करे तो काफिर माना जायेगा , इसलिए कि अल्लाह ने उसे जायेज करार दिया है।

3 . यदि एक से अधिक विवाह से रोक दिया जाये तो बहुत सी महिलायें विवाह एवं संतान से वंचित रह जायेंगी , अतः नेक एवं पवित्र महिला निराशा एवं परेशानी में बिना विवाह के जीवन व्यतीत करेगी और यदि वह नेक न हो तो व्यभिचारिणी (ज़ानिया) बन कर जीवन व्यतीत करेगी तथा अपराधी उसकी इज्जत से खेलते रहेंगे ,

और यह मालूम है कि महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक है क्योंकि पुरुषों की मृत्यु अधिक होती है कभी जंगों में तो कभी दूसरे खतरनाक कामों में और यह भी मालूम है कि महिला बालिग होने के बाद से ही विवाह के लिए तैयार होती है जब की पुरुषों की यह हालत नहीं होती क्योंकि बहुतों के पास महर तथा दांपत्य जीवन के दूसरे खर्च उठाने की क्षमता नहीं होती और इस के अलावा भी कई रुकावटें होती हैं। इस से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम ने महिला के साथ न्याय किया है एवं उस पर दया की है। जो लोग इस वैध बहुलता का विरोध करते हैं वे महिला के शत्रु हैं एवं सदाचारिता तथा नबियों के भी दुश्मन हैं क्योंकि बहुलता अल्लाह तआला के नबियों -अलैहिमुस्सलाम- का तरीका है, वे अल्लाह की शरीयत की सीमा में रहते हुए एक से अधिक पत्नियाँ रखते थे।

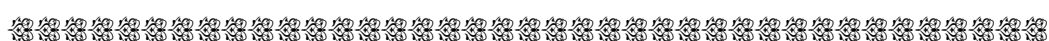
पति जब दूसरी शादी करता है तो पत्नी को जो ग़म और ग़ैरत (क्रोध की भावना जो पति के किसी दूसरी औरत के पास जाने के कारण उत्पन्न होती है) का एहसास होता है तो यह एक भावनात्मक विषय है और कभी भी भावना शरीयत से आगे नहीं हो सकती। परन्तु महिला को यह अनुमति है कि निकाह से पहले यह शर्त रखे कि उस के रहते हुए पति दूसरा विवाह न करे। यदि पति यह शर्त मान ले तो उसपर लागू हो जाएगी, फिर यदि दूसरा विवाह करे तो पति को यह अधिकार है कि यह संबंध तोड़ दे और पति ने उसे जो कुछ दिया हो उस में से कुछ भी वापस ले नहीं सकता।

10- स्वस्थ के संबंध में:

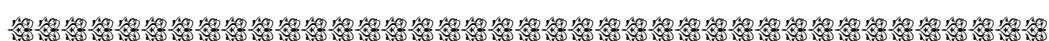
इस्लाम धर्म में उपचार के सारे मुख्य नियम मौजूद हैं अतः कुरआन और हदीस में बहुत सारी शारीरिक एवं मनो विज्ञानिक रोगों की चर्चा है और उनके आध्यात्मिक एवं भौतिक उपचार का वर्णन भी है , अल्लाह तआला ने फरमाया: तथा कुरआन में हम ऐसी चीजें उतारते हैं जो ईमान वालों के लिए रोग निवारक तथा कृपा का साधन हैं। सूरतुल इसरा: 82 तथा अल्लाह के रसूल मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "अल्लाह ने जितने भी रोग उतारे हैं, उनकी दवा भी उतारी है। यह और बात है कि किसी को मालूम हो गई और किसी को मालूम न हो सकी"।

और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "तुम इलाज करो लेकिन किसी हराम दवा का इस्तेमाल न करो"। इमाम इब्ने क़य्यम ने अपनी किताब "ज़ादुल मआद फ़ी हदये ख़ैरिल इबाद " में इस की चर्चा विस्तार के साथ की है उसकी ओर प्रवृत्ति की जाये। यह किताब सबसे अधिक लाभदायक और सही एवं ठोस किताबों में से एक है जिसमें इसलाम की विस्तृत व्याख्या और अंतिम नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- की जीवनी का वर्णन है।

11- अर्थव्यवस्था, व्यापार, कला, कृषि और इनके अतिरिक्त जिन चीजों की मानवीय जीवन में आवश्यकता होती है जैसे खाना, पानी, आम ज़रूरतें, शहरों एवं गांवों का नियंत्रण, उनकी सफाई, उनके मार्गों का नियंत्रण और झूठ तथा जालसाजी की रोक-थाम आदि, इसलाम में इन सारे विषयों का पूर्णरूपेण विस्तृत वर्णन मौजूद है।



दूसरा शत्रु: आकांक्षा: इस का एक प्रकार यह है कि जब इनसान के पास कोई सत्य ले कर आए तो वह उसे ठुकरा दे और जब अल्लाह तआला का कोई आदेश स्पष्ट हो जाए तो उसे इस लिए स्वीकार न करे कि वह उस की चाहत के खिलाफ़ है। इस का एक प्रकार यह भी है कि जज़बा को सत्य तथा न्याय से आगे रखा जाए। इस शत्रु से मुक्ति का रास्ता यह है



कि बंदा स्वच्छंदता से अल्लाह की शरण मांगे एवं अपनी आकांक्षाओं का अनुसरण न करे बल्कि सत्य बोले और उसे स्वीकार करे चाहे वह कितना ही कड़वा हो और शैतान से अल्लाह की पनाह मांगे।

तीसरा शत्रु: बुराई पर उकसाने वाली आत्मा: यह आत्मा जब इनसान को बुराई पर उकसाती है उस के मन में अवैध वासनाओं की इच्छा उत्पन्न होती है, जैसे ज़िना, शराब पीना, रमज़ान में बिना किसी शर्ई (जो इस्लाम में स्वीकार्य हो) उज़्र (न करने का कारण, बहाना आदि) के रोज़ा न रखना आदि। इस शत्रु से बचने का उपाय यह है कि इनसान अपनी आत्मा की बुराई तथा शैतान से अल्लाह की पनाह मांगे एवं अल्लाह की खुशी की खातिर इन अवैध कामों से दूर रहे और धैर्य रखे जिस प्रकार वह खाने पीने की ऐसी वस्तुओं से खुद को रोकता है जो उस के लिए हानिकारक हों, एवं याद रखे कि यह अवैध वासना पल भर की है जिस के बाद लम्बे समय तक उसे अफ़सोस होगा एवं लज्जित होना पड़ेगा।

चौथा शैतान : इनसानी शैतान: यह वह पापी इंसान है जिस पर शैतान ने अपना दाव चला दिया है , स्वयं बुराई करते हैं और लोगों के सामने उसकी अच्छाई बयान करते हैं , इससे बचने का उपाय यह है कि उससे दूर रहें उसके साथ न बैठें एवं उससे बचे रहें ।

13- ऊंचा लक्ष्य तथा आनंदमय जीवन: अल्लाह तआला ने अपने मुसलिम बंदों को जिस ऊंचे लक्ष्य का मार्ग दिखाया है वह दुनिया की यह जिंदगी नहीं है जिस में लुभाने वाली बहुत सी चीजें हैं लेकिन वह सब नाशवान हैं बल्कि वास्तविक स्थायी भविष्य तथा एक ऐसे जीवन की तैयारी करना है जिस का आरंभ मृत्यु के पश्चात होगा। इसलिए एक सच्चा मुसलमान दुनिया में रहते समय उसे केवल आखिरत के जीवन का माध्यम तथा उस की खेती समझता है, मुख्य लक्ष्य नहीं।

उसे अल्लाह तआला का यह कथन याद होता है: मैंने इंसानों और जिनों को केवल अपनी उपासना के लिए पैदा किया है। [सूरा अज़-ज़ारियात : 56] तथा अल्लाह तआला का यह कथन भी उसके सामने होता है: हे लोगो जो ईमान लाये हो! अल्लाह से डरो और देखना चाहिये प्रत्येक को कि उसने क्या भेजा है कल के लिए तथा डरते रहो अल्लाह से



निश्चय अल्लाह सूचित है उससे, जो तुम करते हो। और न हो जाओ उनके समान, जो भूल गये अल्लाह को, तो भुला दिया (अल्लाह ने) उन्हें अपने आपसे, यही अवज्ञाकारी हैं। नहीं बराबर हो सकते नरकी तथा स्वर्गी। स्वर्गी ही वास्तव में सफल होने वाले हैं। अल- हश्र: 18-20 एवं अल्लाह तआला का यह फ़रमान भी: "तो जिसने कण के बराबर भी पुण्य किया होगा, वह उसे देख लेगा। और जिसने एक कण के बराबर भी बुरा कर्म किया होगा, उसे देख लेगा।" [सूरा अज़-ज़लज़ला: 7- 8]

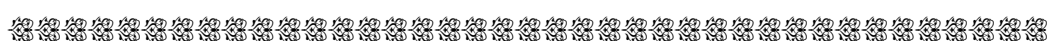
सच्चा मुसलमान इन जैसी महान आयतों को याद करता जिन में अल्लाह तआला ने बंदों का उन की रचना के उद्देश्य तथा उस भविष्य की ओर मार्ग दर्शन किया है जो उन की प्रतीक्षा कर रहा है। अतः वह उस वास्तविक स्थायी भविष्य की प्रस्तुति के तौर पर इखलास के साथ केवल अल्लाह तआला की इबादत करता है एवं ऐसे कर्म करता है जिन से अल्लाह तआला राजी हो जाए और उसे इस जीवन में इबादत की तौफ़ीक़ दे कर और मौत के बाद जन्नत में प्रवेश प्रदान कर सम्मानित करे। अतएव अल्लाह तआला उसे इस दुनिया में सम्मानित करते हुए एक अच्छी जिंदगी देता है, वह अल्लाह की निगरानी और उस की हिफ़ाज़त में रहता है, अल्लाह की रोशनी से देखता है, इबादतें करता है एवं अल्लाह से चुपके चुपके बातचीत करने का आनंद लेता है और अपने मन तथा अपनी जुबान से अल्लाह तआला को याद करता है जिससे उसे संतोष प्राप्त होता है।

एवं लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करता है, अच्छे लोग इस का इकरार करते हैं और उसे दुआएं देते हैं जिससे उसे खुशी होती है और उसका सीना प्रकाशित हो जाता है और हिंसक कमीने इसे नकार देते हैं मगर फिर भी वह उन के साथ अच्छा सलूक करता है क्योंकि उस का उद्देश्य अल्लाह की संतुष्टि तथा उस का पुण्य होता है और कुछ ऐसे नीच भी होते हैं जो इसलाम और मुसलमानों का मज़ाक उड़ाते हैं और उन्हें कष्ट देते हैं तो उसे (मुसलमान को) अल्लाह के रसूलों की बात याद आती है और वह समझ जाता है कि यह तकलीफ़ उसे अल्लाह की राह में मिली है जिसके कारण इसलाम के लिए उसका प्रेम और बढ़ जाता है और वह इसलाम पे अधिक अटल हो जाता है। एवं कार्यालय, खेत या किसी फ़ैक्टरी में काम करता है अथवा कोई व्यापार करता है ताकि अपनी उतपत्ति के द्वारा इसलाम

तथा मुसलमानों का भला करे, क्रयामत के दिन उसे अल्लाह तआला के यहाँ अपने इखलास और अच्छी नीयत के कारण पुण्य मिले, इस कमाई से अपनी तथा अपने परिवार की रोज़ी का इन्तज़ाम कर सके और सदका (दान) में भी हिस्सा ले सके। इस प्रकार वह मन का धनी होता है, राज़ी हो कर शराफ़त की ज़िंदगी गुज़ारता है एवं अल्लाह तआला से पुण्य की आशा रखता है - क्योंकि अल्लाह तआला काम करने वाले ताक़तवर मोमिन से प्रेम करता है-, खाता, पीता है और आराम करता है, फिज़ूलखर्ची नहीं करता, ताकि उसे इबादत (उपासना) की क्षमता प्राप्त हो। और अपनी पत्नी के साथ संभोग करता है ताकि दोनों पावनता का जीवन बिताएं, उन को औलाद हो जो अल्लाह की इबादत करे, अपने माता-पिता के लिए हमेशा दुआ करे और इस प्रकार उसका नेक काम जारी रहे और मुसलमानों की जन संख्या बढ़े जिस के कारण अल्लाह तआला के यहाँ उसे पुण्य प्राप्त हो। हर नेमत (अल्लाह का अनुग्रह, कृपा आदि) पर वह अल्लाह तआला का शुक्र अदा करता है और वह इस तरह कि वह यह इकरार करता है कि हर नेमत अल्लाह तआला ही की ओर से आती है और अल्लाह की उपासना में उस (नेमत जैसे धन, स्वस्थ आदि) का उपयोग करता है और इस के कारण उसे अल्लाह तआला की तरफ़ से नेकी मिलती है। उस का यह विश्वास होता है कि कभी कभी अल्लाह तआला भुक, डर, बीमारी और आपदाओं से उस की परीक्षा लेता है ता कि अल्लाह तआला देखे - जब कि अल्लाह को इस का ज्ञान पहले से होता है - कि वह तकदीर पर कितना धैर्य रखता है और उससे कितना राज़ी होता है अतः वह उस पुण्य की आशा में जो अल्लाह तआला ने सब्र करने वालों के लिए तैयार कर रखा है, सब्र करता है, राज़ी होता है और हर हाल में अल्लाह तआला की सराहना करता है इस प्रकार आपदा उस के लिए आसान हो जाती है और वह उसे स्वीकार कर लेता है जिस प्रकार एक बीमार स्वस्थ की आशा में दवा की कड़वहट को स्वीकार कर लेता है।

यदि मुस्लिम इस उच्च मनोभाव के साथ जीवन निर्वाह करे और हमेशा रहने वाले भविष्य काल के लिए कर्म करता रहे ताकि इस प्रकार स्थायी सौभाग्य से आलिंगित हो कि न इस दुनिया की मज़ा खराब करने वाली चीज़ें उसे निःस्वाद करें और न मृत्यु ही उसे समाप्त

उपरोक्त आयत और इस प्रकार की दूसरी आयतों में अल्लाह तआला सूचित करता है कि अल्लाह तआला नेक पुरुष और महिला को जो अल्लाह की खातिर नेक काम करते हैं, इस दुनिया ही में अच्छा प्रतिकार प्रदान कर देते हैं, और वह (प्रतिफल) आनंदमय अच्छा जीवन है जिस की हम ने पहले चर्चा की है, इसके अतिरिक्त मृत्यु के बाद भी अच्छा प्रतिकार है और वह स्वर्ग का स्थायी सुख - चैन है, इस संबंध में अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- फरमाते हैं: "मोमिन का मामला भी बड़ा अजीब है। उसके हर काम में उसके लिए भलाई है। जबकि यह बात मोमिन के सिवा किसी और के साथ नहीं है। यदि उसे खुशहाली प्राप्त होती है और वह शुक्र करता है, तो यह भी उसके लिए बेहतर है और अगर उसे तकलीफ़ पहुंचती है और सब्र करता है तो यह भी उसके लिए बेहतर है।



पहले नम्बर पर: जो इस्लाम पर धब्बा लगाते हैं उनमें से अक्सर लोगों की दो किस्में

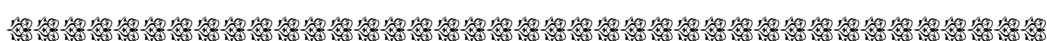
पहली क्रिस्म: ऐसे लोग जो अपने आप को इस्लाम से संबंधित करते हैं और मुसलमान होने का दावा करते हैं किन्तु वह अपने कथनों एवं कर्मों के द्वारा इस्लाम का विरोध करते हैं, ऐसे कार्य करते हैं जैसे लगता है कि इस्लाम से कोई नाता ही नहीं है, वे इस्लाम के प्रतिनिधि नहीं हैं, अतः उनके कार्यों को इस्लाम से जोड़ना उचित नहीं है, ऐसे लोगों की सूची निम्नलिखित में दी जा रही है:

१. अकीदा के विषय में भटके हुए लोग : जैसे वे लोग जो कब्रों का तवाफ़ करते हैं कब्र वालों से अपनी ज़रूरत की चीज़ें मांगते हैं , उन में लाभ तथा हानि पहुंचाने की क्षमता होने का विश्वास रखते हैं ...।

२. असभ्य, धर्म से दूर रहने वाले लोग :

अल्लाह के आवश्यक कर्तव्यों का पालन नहीं करते, और हराम कामों में मगन रहते हैं जैसे शराब , हरामकारी आदि में लिप्त रहते हैं , अल्लाह के शत्रुओं से प्रेम रखते हैं और उन्हीं जैसा बनने का प्रयास करते हैं।

३ . कुछ लोग जो इस्लाम पर भद्दा धब्बा लगाते हैं वह मुसलमान होते हैं, परन्तु इन का ईमान कमजोर होता है तथा ये इस्लामी शिक्षा पर अमल करने में आलस्य करते हैं , कुछ अनिवार्य कामों में आलस्य करते हैं किन्तु उन्हें छोड़ते नहीं , कुछ हराम काम भी करते हैं जो शिर्क एवं कुफ्र की सीमा तक नहीं पहुंचते, इन के बहुत से बुरे स्वभाव भी होते हैं, जिन से इस्लाम मुक्त है , बल्कि इस्लाम में उन की गणना बड़े गुनाहों में होती है , जैसे झूठ , धोखा, वादा खिलाफ़ी और हिंसा आदि । ऐसे सारे लोग इस्लाम की बदनामी का कारण बनते हैं क्योंकि इस्लाम से अपरिचित गैर मुस्लिम समझते हैं कि इस्लाम इन चीजों की आज्ञा देता है।

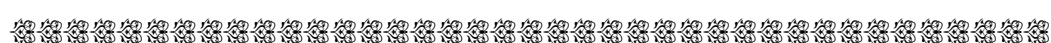


इस्लाम के शत्रुओं ने जैसे मुसतशरिकों और ईसाई मिश्ररियों ने इस्लाम और अंतिम
रसूल पर बहुत से आरोप लगाये हैं।

२. कभी तो आपपर दोष लगाया हालांकि आप संपूर्ण हैं एवं हर प्रकार के दोष तथा कमी से मुक्त हैं और यह अल्लाह तआला की गवाही है।

३. कभी तो इस्लाम के न्यायिक आदेशों की सूरत बिगाड़ी ताकि लोग इससे घृणा करने लगें।

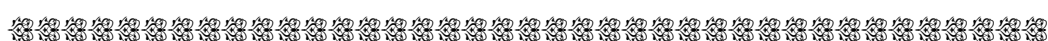
परन्तु अल्लाह तआला उनकी चालों को मात देता है , क्योंकि वे सत्य के विरुद्ध लड़ाई करते हैं और जीत हमेशा सत्य ही की होती है। अल्लाह तआला ने फरमाया: वे चाहते हैं कि बुझा दें अल्लाह के प्रकाश को अपने मुखों से तथा अल्लाह पूरा करने वाला है अपने प्रकाश को, यद्यपि बुरा लगे काफ़िरो को। "वही अल्लाह है जिसने अपने संदेशवाहक को



दसरे नम्बर पर: इसलाम के स्रोत:

ऐ बुद्धिमान व्यक्ति, जब आप इसलाम के संबंध में सटीक जानकारी अर्जित करना चाहें तो कुरआन पढ़ें एवं नबी -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- की सहीह (जो झूठी अथवा संदेह युक्त न हों) हदीसों को सामने रखें जो आप को निम्नांकित पुस्तकों में मिलेंगी: सहीह बुखारी, सहीह मुसलिम, मुअत्ता इमाम मालिक, मुसनद अहमद, सुनन अबू दाऊद, सुनन नसाई, सुनन तिरमिज़ी, सुनन इब्ने माजह तथा सुनन दारिमी (आदि), एवं सीरत इब्ने हिशाम, तफ़सीर इब्ने कसीर तथा इब्नुल क़ैइम की ज़ादुल मआद जैसी पुस्तकों का अध्ययन करें जिन के लेखक इसलाम के इमाम (इसलाम का सब से अधिक ज्ञान रखने वाले) तथा तौहीद (एक अल्लाह की उपासना) के प्रचारक हैं जैसे शैखुल इसलाम इब्ने तैमीया तथा इमाम मुजद्दिद मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब जिन के तथा तौहीदवादियों (जो केवल अल्लाह की उपासना की ओर आवाहन करते हैं) के शासक मुहम्मद बिन सऊद के द्वारा बारहवीं शताब्दी हिजरी से अब तक अल्लाह तआला ने अरब द्वीप तथा कुछ दूसरे स्थानों में शिर्क फैल जाने के बाद इसलाम धर्म तथा अक़ीदा तौहीद को बल प्रदान किया।

सारी प्रशंसाएं अल्लाह तआला ही के लिए उचित हैं जो सारे संसार का रब है। रही बात प्राच्यविदों (orientalists) की किताबों तथा ऐसे लोगों की किताबों की जो इस्लाम से अपना संबंध स्थापित करते हैं किन्तु बहुत सी चीजों में वे इस्लाम का विरोध करते नज़र आते हैं, सारे सहाबा ए किराम या कुछ सहाबा ए किराम की प्रतिष्ठाओं पर कटाक्ष करते हैं, या तौहीद के ध्वजावाहक इमामों को बुरा - भला कहते हैं, जैसे इमाम इब्ने तैमिया, इमाम इबनुल कैइम और मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब आदि, इन पर अनेक प्रकार के दोष लगाते हैं, तो यह पथभ्रष्ट करने वाली पुस्तकें हैं, इन से धोखा न खाएं और इन के पठन-पाठन से बचें। अल्लाह के तमाम रसूलों पर:



तीसरा; इसलामी मज़हबः

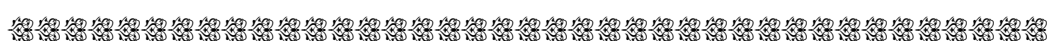
तमाम मुसलमानों का मज़हब एक है, इसलाम। एवं सब का आधार कुरआन तथा अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- की हदीस है। और यह जो कहा जाता है कि इसलाम में चार मज़हब हैं, हनफी, शाफई, मालिकी तथा हंबली तो वास्तव में यह इसलामी फ़िक़ह (इसलामी विधान का ज्ञान) के चार विद्यालय हैं, इन चार इमामों ने इसलाम के मूल सिद्धांतों की शिक्षा दी और इन चारों मज़हबों का आधार कुरआन व हदीस ही है एवं इन के बीच जो कुछ मतभेद नज़र आते हैं तो वे कुछ ही अमुख्य विषयों में पाए जाते हैं और प्रत्येक इमाम ने अपने छात्रों को यही शिक्षा दी है कि वे उसी मत को स्वीकार करे जो कुरआन व हदीस पर आधारित हो चाहे कहने वाला कोई और ही क्यों न हो।

मुसलमान किसी एक मजहब को अपनाने का पाबन्द नहीं है, वह तो केवल कुरआन और हदीस का पाबन्द है। इन मजहबों से संबन्ध रखने वाले बहुत से लोग बुरे अक्कीदा के शिकार हो जाते हैं जैसे कब्रों का तवाफ करना, कब्र वासियों से सहायता मांगना, अल्लाह की विशेषताओं का गलत अर्थ बताना आदि, ऐसे लोग अपने इमामों के अक्कीदे का विरोध करते हैं इसलिए कि इमामों का अक्कीदा सलफ सालेहीन का अक्कीदा था।

चौथा: इस्लाम से निष्कासित दल:

इस्लामी दुनिया में इस्लाम से निष्कासित फिर्के (दल) भी पाये जाते हैं, उनका दावा है कि वह मुसलमान हैं और अपने आप का इस्लाम से संबंध स्थापित करते हैं, परन्तु वास्तव में वह मुसलमान नहीं हैं इसलिए कि उनका विश्वास कुफ्रिया (कुफ्र से संबंधित) विश्वासों में है, अल्लाह का, उसकी आयतों का, उसकी तौहीद का इंकार उनके विश्वास का आधार है, उनमें से कुछ दलों का उल्लेख निम्नांकित में किया जाता है:

1- बातिनी दल:

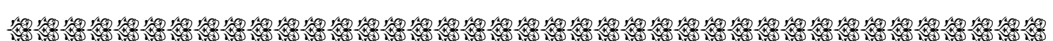


यह दल अवतारवाद तथा पुनर्जन्म में विश्वास रखता है और इन का मानना है कि कुरआन व हदीस की बातों का एक आंतरिक अर्थ होता है, वह अर्थ नहीं जो नबी - सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- ने बयान किया और जिस पर मुसलमान एकमत हैं। और यह आंतरिक अर्थ वे खुद अपनी आकांक्षाओं के अनुसार गढ़ लेते हैं, इस दल का आविर्भाव ऐसे हुआ कि पर्शिया में जब इस्लाम तेजी से फैलने लगा तो कुछ यहूदी, मजूसी तथा नास्तिक दार्शनिक परेशान हो गए, वे एक जगह जमा हो कर एक मजहब की रचना के संबंध में विचार-विमर्श करने लगे, जिस का उद्देश्य था मुसलमानों की एकता को तोड़ना एवं कुरआन ए अज़ीम के संबंध में उनके बीच मतभेद पैदा करना, अतः उन्होंने इस नष्ट-भ्रष्ट करने वाले मजहब की रचना की और इस की ओर आवाहन करने लगे, अपना संबंध आल ए बैत (नबी के परिवार) से जोड़ा और यह दावा कर बैठे कि वे उन के शीआ (उन के प्रेमी तथा समर्थक) हैं ताकि आम जनता को अधिक भ्रमित कर सकें, इस प्रकार उन्होंने ने मूर्ख व्यक्तियों की एक बड़ी संख्या को सत्य से विचलित कर दिया।

2- उन्हीं पथभ्रष्ट फ़िर्कों में से " कादयानी " भी है जिसका संबंध गुलाम अहमद कादयानी से है, उसने नबूत का दावा किया और लोगों को उस पर ईमान लाने का निमंत्रण दिया, अंग्रेजों ने अपने शासन काल (जो उसने भारत पर काबिज होकर उसको गुलाम बना रखा था) में उसका प्रयोग किया और उसके मानने वालों को अधिक पुरस्कार से सम्मानित किया जिसके कारण बहुतों ने उसकी पैरवी करनी शुरू कर दी, इस प्रकार कादयानियत अस्तित्व में आई जो इस्लाम का दावा करती है हालांकि वास्तव में वह इस्लाम को समाप्त करने के प्रयास में जुटी हुई है। और यह प्रसिद्ध है कि उसने एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम " तस्दीके बराहीन अहमादिया " है जिसमें नबूत का दावा किया, इस्लाम के नुसूस का उलट - फेर किया उन्हीं उलट फेरों में से कुछ निम्नलिखित में दिया जा रहा है: उस ने दावा किया कि इस्लाम में जिहाद

3- आंतरिक फिर्को में " बहाई " फिर्का भी है जिसका इस्लाम से कोई संबंध नहीं है , ईरान में उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में इसकी आधारशिला अली मुहम्मद ने रखी , कुछ ने इस का नाम मुहम्मद अली शीराजी बताया है, वो शिया के इस्ना अशरी फिर्का से संबंध रखता था, उसने -जैसा कि प्रसिद्ध है- शीआ से हट कर एक नये मजहब की नींव रखी और दावा किया कि वो " महदी मुंतज़र " है , फिर दावा किया कि अल्लाह तआला उसके अंदर प्रवेश कर गया है इसलिए वह स्वयं लोगों के लिए अल्लाह है , -अल्लाह तआला ऐसे मुलहिद (नास्तिक) व काफिर की बातों से पवित्र एवं ऊंचा है- , उसने लेखा जोखा , मृत्यु के पश्चात जीवन , स्वर्ग - नरक का इंकार किया , ब्राह्मण और बुद्ध मत के तरीके को अपना लिया , यहूद, ईसाई और मुसलमानों को एक समान ठहरा दिया और कहा कि इन में कोई अंतर नहीं है , फिर अंतिम नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- की नबूवत का इंकार किया , बहुत से इस्लामी आदेशों का भी इंकार किया। इसके बाद एक व्यक्ति उसका सहायक उसका मंत्री बना जिसने अपना नाम ' अलबहा ' बताया, उसने इस निमंत्रण को अधिक फैलाया एवं इसके मानने वालों की संख्या बढ़ने लगी। इस फिर्का को इसी व्यक्ति के नाम से जोड़ा गया और इसका नाम ' बहाईया ' पड़ गया ।

इस्लाम से निष्कासित फ़िर्कों में यद्यपि वे इस्लाम का दावा करते हैं , नमाज़ , रोज़ा और हज अदा करते हैं , कई बड़े फ़िर्के है जिन का दावा है कि जिब्रील ने रिसालत को पहुंचाने में बेईमानी की , अल्लाह ने उन्हें अली -रज़ियल्लाहु अनहु- के पास भेजा था . किन्तु उन्होंने मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- के पास पैगाम पहुंचा दिया , बल्कि इन में से कुछ कहते हैं कि अली ही अल्लाह हैं एवं उनके , उनके संतान , उनकी पत्नी फातिमा एवं उनकी



इनका यह भी विश्वास है कि जो कुरआन आज कल मुसलमानों के पास है उसमें कमी और बढ़ोत्तरी हो चुकी है, अपने लिए उन्होंने एक विशेष कुरआन बना लिया है, अपनी ओर से उसमें सूर और आयतें बढ़ाई हैं, नबी करीम -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- के बाद सबसे सर्वश्रेष्ठ अबू बकर और उमर -रज़ियल्लाहु अन्हुमा- को यह लोग गाली देते हैं, उम्मुल मोमिनीन हज़रत आईशा रज़ि अल्लाहु अन्हा को भी गाली देते हैं, अली -रज़ियल्लाहु अनहु- और उनकी संतान से अच्छे बुरे समय में सहायता मांगते हैं, अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारते हैं और उनकी उपासना करते हैं, अपने आप को शिया कहते हैं। (यानी अहले बैत की जमाअत) अली -रज़ियल्लाहु अनहु- और उनकी संतान इनसे बिल्कुल मुक्त हैं इसलिए कि इन्होंने उन्हें पूजित की श्रेणी में रख दिया है, अल्लाह पर झूठ गढ़ा और अल्लाह के कलाम में हेरा - फेरी की है, अल्लाह तआला उच्च है इन सारी बातों से जो यह कह रहे हैं ।

यह कुछ काफिर फ़िर्के हैं जिनका हम ने वर्णन किया, इसके अतिरिक्त और भी काफिर फ़िर्के हैं जो इस्लाम को बरबाद करने में लगे हुए हैं, ऐ बुद्धिमान और ऐ मुसलमान, जहाँ कहीं भी हो तुम्हें हमेशा इस बात का खयाल होना चाहिए कि इस्लाम केवल दावा करने का नाम नहीं है बल्कि कुरआन और हदीस को जानने और उसके अनुसार कर्म करने का नाम है, कुरआन और हदीस में गौर करें, इसमें आप निर्देश (हिदायत) प्रकाश और सीधा मार्ग पायेंगे, ऐसा सीधा मार्ग जिस पर चलने वाला स्वर्ग में पहुँच कर नेमत एवं कल्याण से आलिङ्गित होगा।



मुक्ति का निमंत्रण

ऐ बुद्धिमान इंसान चाहे आप पुरुष हों या महिला जो अभी इस्लाम के प्रकाश से अनभिज्ञ हैं, मैं आप को मुक्ति तथा कल्याण की ओर बुलाता हूँ और कहता हूँ:

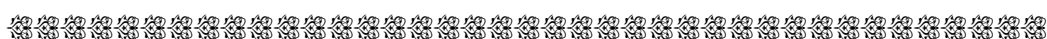
* अपने आप को अल्लाह की यातना से बचा लो जो मृत्यु के पश्चात कब्र में होगा फिर नरक की आग में होगा ।

अल्लाह पर ईमान लाकर अपने आप को बचा लो , नबी -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- पर ईमान लाकर कि वह रसूल हैं और इस्लाम को सत्य धर्म स्वीकार कर के और सच्चे दिल से यह कहो : " ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह " अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं । पांच नमाज़ अदा करो , अपने धन की ज़कात अदा करो , रमजान के रोजे रखो तथा अल्लाह के घर का हज करो यदि उसकी शक्ति रखते हो ।

अपने इसलाम (अल्लाह के आज्ञापालन) का एलान करो इसके बिना न कोई उपकार एवं कल्याण है और न कोई मुक्ति ।

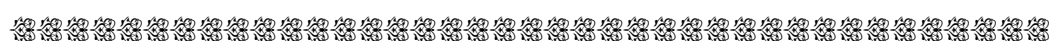
* मैं तुम्हें विश्वास दिलाने के लिए अल्लाह की कसम खाता हूँ कि जिसके अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं , इस्लाम ही सत्य धर्म है अल्लाह तआला किसी से इस धर्म के अतिरिक्त कोई और धर्म स्वीकार करने वाला नहीं है , मैं अल्लाह को फरिश्तों को और सारे मानव जाति को गवाह बनाता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूजित नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं तथा इस्लाम ही सत्य धर्म है और मैं मुसलमान हूँ।

मैं अल्लाह की दानशीलता एवं उपकार के माध्यम से सवाल करता हूँ कि वह मुझे , मेरी संतान और सारे मुसलमान भाइयों को सच्चे मुसलमान की दशा में मृत्यु दे तथा हमें स्वर्ग में हमारे सच्चे ईमानदार नबी मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- और सारे अंबिया तथा हमारे नबी के घर वालों और सहाबा की संगति से सम्मानित करे । अल्लाह से



अल्लाह बेहतर जानता है। दुरुद व सलाम की धारा बरसे हमारे नबी मुहम्मद पर एवं आपके परिवार-परिजन और तमाम सहाबा (साथियों) पर। सारी प्रशंसाएं अल्लाह तआला ही के लिए उचित हैं जो सारे संसार का रब है।

★ ★ ★



विषय सूची

भूमिका और समर्पण.....	3
पहला अध्याय: अल्लाह(१) की जानकारी जो महान सृष्टा है।.....	5
दूसरा अध्याय: अपने नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पहचानना ...	18
तीसरा अध्याय: सत्य धर्म -इसलाम- की पहचान:	24
चौथा अध्याय: इसलाम की विधि.....	62
पाँचवाँ अध्याय: कुछ शंकाओं का उत्तर.....	86
विषय सूची	95



